रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-38, अंक-1, आश्विन-कार्तिक, विक्रम सम्वत् 2077, अक्टूबर, 2020

झिंझोली में वृक्षारोपण

श्री सुरेश सोनी और डॉ कृष्ण गोपाल एक साथ पौधा रोपण करते हुए।

डॉ कृष्ण गोपाल पौधा लगाते हुए।

पौधा लगाते हुए श्री ऋषि पाल डडवाल।

गत दिनों हरियाणा के झिंझोली में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री सुरेश सोनी और डॉ. कृष्ण गोपाल ने वृक्षारोपण किया। राष्ट्रीय सेवा भारती के श्री ऋषि पाल डडवाल ने भी पौधा लगाया। इस कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय सेवा भारती ने ही किया था। इस अवसर पर बड़ी संख्या में विभिन्न संगठनों के कार्यकर्ता और स्वयंसेवक उपस्थित थे।

सम्पर्क सम्मेलन सम्पन्न

गत 12 सितंबर को आनंद निकेतन में सम्पर्क सम्मेलन आयोजित किया गया। सोशल डिस्टैंसिग को ध्यान में रवते हुए सेवा भारती द्वारा बहुत ही सफलतापूर्वक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आपस में सम्पर्क रहे, एक-दूसरे के काम आएं, इन्हीं उद्देश्यों को लेकर यह सम्मेलन हुआ।

सम्मेलन में अनेक सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिज्ञ, युवा, उद्योगपति एवं एवं बुद्धिजीवी उपस्थित रहे। महामारी में बेरोजगारी को दूर करने के सुझाव एवं आत्मनिर्भरता पर विचार-विमर्श करने के उद्देश्य से अनेक वर्गों के लोगों को आमंत्रित किया गया।

'अर्थ सेवियर फाउंडेशन' के अध्यक्ष श्री रवि कालरा इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि रहे। इसके अलावा सेवा भारती के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल भी उपस्थित रहे। श्री अग्रवाल ने सेवा भारती के कार्यों के बारे में अतिथियों को जानकारी दी। सेवा भारती की सम्पर्क प्रमुव श्रीमती निधि आहूजा भी उपस्थित रहीं।

अष्टवकरा ट्रस्ट की अध्यक्ष श्रीमती कल्पना पोपली और आरडब्ल्यूए की अध्यक्ष एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती जौली सप्रा अपनी टीम के साथ उपस्थित हुई। उद्योगपति एवं 'आस्था' के अध्यक्ष श्री मुकेश सवूजा भी अपने साथियों के साथ शामिल हुए। श्री प्रशांत शर्मा, पूर्व विधायक श्री अनिल शर्मा, पूर्व पार्षद श्री राधेश्याम और श्री अजयपाल सम्मेलन में रहे। सामाजिक कार्यकर्ता रितु भंडारी जी एवं मीना जी के सहयोग से सम्मेलन सफल रहा।

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

●

प्रबन्धक
श्री बिशनदास चावला

●

सम्पादक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

सहसम्पादक
शिवाली अग्रवाल

●

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

●

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

●

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-38, अंक-1 कुल पृष्ठ-36 अक्टूबर, 2020

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		04
दिल्ली के प्रमुख देवी मन्दिर	प्रतिनिधि	03
मैं हिन्दी हूँ	डॉ. मृदुला पांडे	10
क्या है आरोग्य	इन्दिरा राय	11
100 हाथों से कमाएं, 1000 हाथों से दान दें	लाजपतराय सभरवाल	13
सीता जी को आश्रय देने वाले संत	आचार्य मायाराम पतंग	14
पाप की गठरी		16
सेवा ही जीवन है इनका	विनीता अग्निहोत्री	17
सेवा भारती, दिल्ली (2020-2022)		18
सरदारों के सरदार	अंजनी कुमार	20
बच्चों पर माता-पिता के संस्कारों का प्रभाव	होलिका कुमारी	22
रामराज्य का आधारसूत्र	रिखबचंद जैन	24
मणिपुर का महिला बाजार	प्रतिनिधि	26
सेवा भारती की स्थापना दिवस पर विशेष	अंजू पांडेय	27
लाल बहादुर शास्त्री	रचना शास्त्री	28
हृदय परिवर्तन	नन्दिनी रस्तोगी 'नेहा'	29
सेतु नाम नया, पर काम नहीं		30
हे राम!	डॉ. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव'	32
सेवा, सहानुभूति और उदारता	श्री देवराहा बाबा जी	33
जल की कीमत	सुनील श्रीवास्तव	34

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

शातिरों की कलुष कथा 17,000 पन्नों में

हम सब देश, समाज, गाँव, बस्ती... की सेवा में लगे हैं। सेवा से बड़ा और कार्य तो हो ही नहीं सकता है, पर कभी-कभी यह भी सोचना चाहिए कि हमारे आस-पड़ोस में क्या हो रहा है। हम और आप तो यह सोचते हैं कि यह देश हमारा है और यहाँ रहने वाले लोग हमारे हैं। इस विचार-भाव से काम करते हैं, लेकिन हमारे आस-पास ही कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो इस देश को अपना ही नहीं मानते हैं। उनके अनुसार यह काफिर देश है और यह जब तक 'इस्लामी' देश नहीं बन जाएगा तब तक यह उनका अपना देश नहीं है। ऐसी ही सोच रखने वालों ने फरवरी के अंतिम सप्ताह में दिल्ली में दंगे किए।

दिल्ली के दंगों पर पुलिस द्वारा दाखिल 17,000 पन्नों के आरोप पत्र से पता चलता है कि ये दंगे सुनियोजित थे। दिल्ली को 'कश्मीर' बनाने के लिए पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया यानी पीएफआई, तब्लीगी जमात, वामपंथी और जिहादी तत्व एक साथ मिलकर काम कर रहे थे।

दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने अदालत में जो आरोप पत्र दाखिल किए हैं, उनमें कहा गया है कि दिल्ली में एक सुनियोजित योजना के तहत दंगे कराए गए। इस योजना में पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई), तब्लीगी जमात, अपनी बुद्धि को किराए पर देकर देश में अशांति फैलाने वाले वामपंथी, निर्दोषों की हत्या करने वाले जिहादी, जामिया कोआर्डिनेशन कमेटि और इस तरह के अनेक गुट शामिल हैं। इन आरोपपत्रों में दंगे के साजिशकर्ताओं के रूप में 15 लोगों के नाम प्रमुख रूप से लिए गए हैं। आम आदमी पार्टी (आआपा) का नेता ताहिर हुसैन, वामपंथी छात्र नेता उमर खालिद, राजधानी पब्लिक स्कूल (शिव विहार, दिल्ली) का मालिक फैसल फारुख, जेएनयू का छात्र रहा शरजील इमाम, जामिया इलाके में रहने वाला खालिद सैफी आदि ने दंगे की साजिश रची। फैसल फारुख पर तो मानो दंगे का भूत सवार था। आरोपपत्र के अनुसार फैसल ने दंगे कराने के लिए अपने स्कूल की छत पर गुलेल लगवाई थी। इसके लिए शिव विहार निवासी हाजी रहीम इलाही, जो बेल्डर का काम करता है, की मदद ली थी।

यह सोचने वाली बात है कि जो फैसल हजारों करोड़ रुपये का मालिक है, उसके कई स्कूल चलते हैं, वह प्रतिदिन लाखों रुपये कमाता था। आखिर उसने दंगे के बारे में क्यों सोचा! इसी तरह ताहिर हुसैन पार्षद था, उसकी भी करोड़ों की संपत्ति है। उसके कई मकान हैं। वह चाहता तो अपना व्यवसाय बढ़ाता और पैसा कमाता रहता। इलाके में रौब झाड़ने के लिए नेता बन ही गया था। इसका भी वह लाभ उठाता और आज नहीं तो कल विधानसभा या लोकसभा पहुँच सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया और दंगे में शामिल हो गया।

ऐसे ही उमर खालिद भी कर सकता था। जेएनयू में देशद्रोही नारे लगाकर वह कुख्यात हो ही गया था। वामपंथी और अपने को सेकुलर मानने वाले उसे पूरे भारत में बुलाते थे और भाषण कराते थे। यानी वह भी नेता बन गया था। चाहता तो वह भी कहीं से चुनाव लड़ता और किसी विधानसभा या लोकसभा में पहुँच जाता।

ऐसे ही शरजील इमाम है। आई.आई.टी., मुम्बई से पढ़ाई करने के बाद उसने जेएनयू में दाखिला लिया था। वह भी चाहता तो आराम से कहीं कोई अच्छी नौकरी कर सकता था।

लेकिन चाहे फैसल हो, ताहिर हो, उमर हो या शरजील हो, इन सबने वही किया है, जो इस देश को गजवा-ए-हिंद यानी इस्लामी देश की ओर ले जाता है। इसलिए हम और आप जो भी कुछ कर रहे हैं, वे करते रहें, लेकिन सदैव चौकन्ने भी रहें। ऐसा कोई काम न करें, जिससे कि ताहिर, फैसल, उमर, शरजील जैसे देशद्रोहियों को खाद-पानी मिले। ऐसा करना भी देश की सेवा ही है। ❐

पाथेय

यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते॥

(गीता, 22-4)

सरलार्थ : जो बिना इच्छा के अपने आप प्राप्त हुए पदार्थ में सदा सन्तुष्ट रहता है, जिसमें ईर्ष्या का सर्वथा अभाव हो गया है, जो हर्ष-शोक आदि द्वन्द्वों में सर्वथा अतीत हो गया है-ऐसा सिद्धि और असिद्धि में सम रहने वाला कर्मयोगी कर्म करता हुआ भी उनसे नहीं बँधता।

शाश्वत धर्म

स्वार्थपरता ही अर्थात् स्वयं के संबंध में पहले सोचना ही सबसे बड़ा पाप है। जो मनुष्य यह सोचता है कि मैं पहले खा लूँ, मुझे ही सबसे अधिक धन मिल जाए, मैं ही सर्वस्व का अधिकारी बन जाऊँ, मेरी ही सबसे पहले मुक्ति हो जाए और मैं ही औरों से सबसे पहले स्वर्ग को चला जाऊँ, वह निश्चय ही स्वार्थी है। निःस्वार्थ व्यक्ति तो यह कहता है, ''मुझे अपनी चिन्ता नहीं है। मुझे स्वर्ग जाने की भी कोई आकांक्षा नहीं है। यदि मेरे नरक में जाने से किसी को लाभ हो सकता है, तो मैं उसके लिए भी तैयार हूँ।'' यह निःस्वार्थता ही धर्म की कसौटी है। जिसमें इतनी अधिक निःस्वार्थता है, वह उतना ही आध्यात्मिक है और शिवजी के उतने ही समीप है। सारी उपासना का सार है पवित्र होना और दूसरों की भलाई करना। जो शिव को दीन-हीन, दुर्बल और रोगी में देखता है, वह वास्तव में शिव की उपासना करता है। और जो शिव को केवल मूर्ति में देखता है, उसकी उपासना मात्र प्रारंभिक है।

-स्वामी विवेकानन्द

अक्टूबर, 2020 मास के स्मरणीय दिवस

01.10.2020	गुरुवार	पंचक, सत्यनारायण व्रत कथा	17.10.2020	शनिवार	शारदीय नवरात्र प्रारंभ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती
02.10.2020	शुक्रवार	गांधी जयन्ती, शास्त्री जयन्ती			
04.10.2020	रविवार	द्वितीया तिथि की वृद्धि	22.10.2020	गुरुवार	हेमन्त ऋतु प्रारंभ
13.10.2020	मंगलवार	कमला पुरुषोत्तम एकादशी व्रत	23.10.2020	शुक्रवार	श्री दुर्गाष्टमी पूजा
			24.10.2020	शनिवार	महानवमी, शस्त्र पूजा
15.10.2020	गुरुवार	चतुर्दशी तिथि का क्षय	25.10.2020	रविवार	विजयादशमी, दशहरा
16.10.2020	शुक्रवार	अधिक मास समाप्त	31.10.2020	शनिवार	शरद पूर्णिमा, वाल्मीकि जयन्ती

दिल्ली के प्रमुख देवी मन्दिर

■ प्रतिनिधि

दिल्ली एक ऐतिहासिक नगरी है। प्राचीन काल में यहाँ अनेक बड़े और प्रसिद्ध मंदिर थे। किंतु विदेशी हमलावरों ने उनमें से अधिकांश को तोड़ दिया। दिल्ली में अभी भी अनेक प्राचीन मंदिर हैं। अब तो यहाँ अनेक बड़े और आकर्षक मंदिर बन चुके हैं। नवरात्र के अवसर पर कुछ देवी मंदिरों के बारे में बताने का प्रयास किया गया है। आशा है पाठकों को यह लेख पसंद आएगा।

झण्डेवाला माता मंदिर

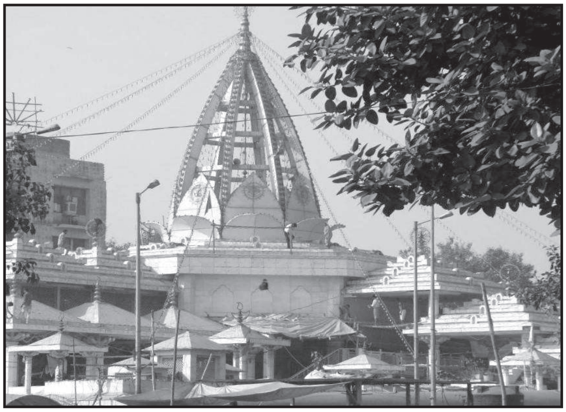

मध्य दिल्ली में स्थित झण्डेवाला माता मंदिर का अपना एक ऐतिहासिक महत्त्व है। आज जहाँ यह मंदिर है वह अरावली पर्वत की श्रृंखलाओं का एक हिस्सा है। कहा जाता है कि उस समय इस स्थान पर बड़ी हरियाली होती थी। प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त इस स्थान पर लोग साधना करने आते थे। उन साधकों में एक कपड़ा व्यवसायी श्री बद्रीदास भी थे। वे वैष्णो माता के भक्त थे।

एक दिन जब वे साधनारत थे तभी उन्हें अनुभूति हुई कि यहाँ जमीन के अंदर कोई मंदिर है। उन्होंने उस स्थान को खरीदकर वहाँ खुदाई करवाई। खुदाई में प्राचीन मंदिर के अवशेष मिले। खुदाई में एक झण्डा भी मिला। इस कारण इस स्थान का नामकरण झण्डेवाला किया गया। खुदाई में देवी की मूर्ति भी मिली। किंतु जमीन खोदते समय मूर्ति खंडित हो गई। खंडित मूर्ति की पूजा निषेध है। इस कारण उस मूर्ति में चांदी के हाथ लगवाए गए। माँ की वह मूर्ति अभी भी मंदिर गुफा में सुरक्षित है। गुफा के ऊपर भव्य मंदिर है। यह मंदिर अष्टकोणीय है। इसका शीर्ष कमल फलकों के आकार का बना है।

मुख्य भवन में माता झण्डेवाली की मूर्ति स्थापित है। यह मूर्ति बड़ी दिव्य और आकर्षक है। ऐसा लगता है कि मूर्ति अब बोलेगी कि तब। मुख्य भवन में पास ही गणेश जी, लक्ष्मी जी, शीतला माता, संतोष माता, वैष्णो माता, हनुमान जी आदि देवी-देवताओं के विग्रह स्थापित हैं। झण्डेवाली माता बड़ी उदारमना हैं। सच्चे मन से माँगी गई हर मनोकामना यहाँ पूर्ण होती है।

ऐसे हजारों भक्त हैं, जो वर्षों से प्रति सप्ताह एक निर्धारित दिन में मंदिर आते हैं और माता के दर्शन कर अपने को भाग्यशाली मानते हैं। नवरात्रों में जहाँ प्रतिदिन लाखों भक्त आते हैं, सामान्य दिनों में भी भक्तों का यहाँ तांता लगा रहता है। मंदिर में प्रत्येक मंगलवार एवं शनिवार को विशेष गतिविधियाँ होती हैं। इस मंदिर का संचालन 'ब्रदी भगत झण्डेवाला टेम्पल सोसायटी' करती है।

हाल के वर्षों में इस मंदिर की अन्य गतिविधियाँ भी खूब बढ़ी हैं। मंदिर तो विस्तारित हो ही रहा है, सामाजिक कार्यों में भी मंदिर की आय का कुछ भाग लगाया जाता है। मंदिर द्वारा 'ब्रदी भगत वेद विद्यालय' चलता है, जहाँ बच्चों को वेद की शिक्षा दी जाती है। संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए वेद विद्यालय में एक संवादशाला चलती है। यहाँ संस्कृत साधकों को संस्कृत बोलने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इन साधकों के रहने, खाने आदि का खर्च झण्डेवाला माता मंदिर ही करता है।

मंदिर द्वारा निःशुल्क औषधालय भी चलाए जाते हैं, जहाँ रोगियों को आयुर्वेद, एलोपैथ, होमियोपैथ की दवाइयाँ दी जाती हैं।

मंदिर से हजारों सेवादार जुड़े हैं जो नवरात्रों और विभिन्न विशिष्ट आयोजनों में अपने सेवाएँ देते हैं।

कालकाजी मंदिर

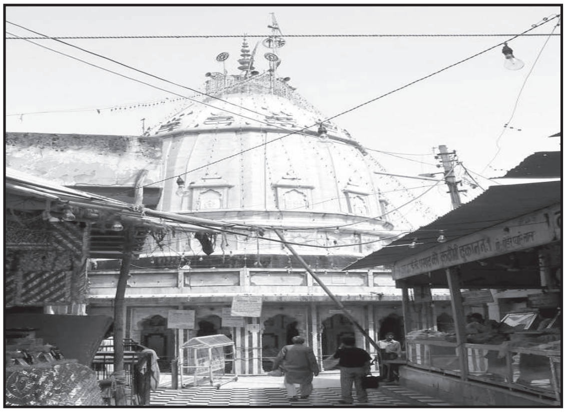

यह मंदिर दक्षिणी दिल्ली के कालकाजी में स्थित है। यह स्थान नेहरू प्लेस से बिल्कुल सटा हुआ है। कालकाजी मेट्रो स्टेशन भी है। यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है। कालका मंदिर की गणना भारत के प्राचीन सिद्धपीठों में होती है। इसे मनोकामना सिद्धपीठ और जयंती कालीपीठ भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि असुरों द्वारा सताए जाने पर ब्रह्मा जी की सलाह पर देवताओं ने शिवा (शक्ति) की आराधना की। देवी के प्रसन्न होने पर देवताओं ने उनसे असुरों से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की। इसके बाद देवी ने अपनी शक्ति से कौशिकी देवी को प्रकट किया। कौशिकी ने अनेक असुरों को मार गिराया, पर वह उनके रक्तबीज को नहीं मार सकीं। रक्तबीज जहाँ भी गिरता थ वहीं अनेक असुर पैदा हो जाते थे। फिर कौशिकी ने याचनापूर्ण दृष्टि से माँ पार्वती की ओर देखा। पार्वती जी ने अपनी भृकुटी से महाकाली को प्रकट किया और रक्तबीजासुर के वध का आदेश दिया। आदेश मिलते ही महाकाली ने इसी स्थान पर उस रक्तबीजासुर को मार गिराया और उसका रक्त पी लिया। रक्तपाल करने के लिए माँ काली ने अपने मुख का विशेष विस्तार किया था। उस समय उस विकराल देवी की स्तुति भगवान् शंकर सहित सभी देवताओं ने की थी। माना जाता है कि उसी समय माँ काली ने भक्तों को यह भी कहा कि जो भी भक्त इस स्थान पर श्रद्धा से मेरी पूजा-अर्चना करेगा उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण होगी। इस पीठ के वर्तमान महंत श्री सुरेन्द्रनाथ अवधूत कहते हैं, 'शास्त्रों में उल्लेख मिलता है कि महाभारत काल में भगवान् श्रीकृष्ण पाण्डवों को लेकर यहाँ आए थे। उन्होंने माँ काली की पूजा की और विजयी होने का वर प्राप्त किया। बाद में काल के प्रभाव से यह स्थान जनमानस की दृष्टि से ओझल हो गया। फिर इस स्थान को नाथ सम्प्रदाय के बाबा बालकनाथ ने अपनी तपस्या के लिए चुना। माँ ने उन्हें मंदिर बनाने का आदेश दिया। बाबा के कहने पर अबकर के पेशकार राजा मिर्जा केदार ने इस स्थान का जीर्णोद्धार करवाया।'

मंदिर की परिक्रमा के साथ ही छोटा शिवलिंग है। उत्तर दिशा में गणेश जी हैं। पीछे कुछ दूरी पर हनुमान जी एवं भैरव का स्थान है। मंदिर के चारों ओर सुंदर सरोवरों, बावड़ियों, चबूतरों और प्राचीन भवनों वे अवशेष दिखाई देते हैं। भवन के भीतर बने भित्ति चित्रों को देखकर मंदिर की भव्यता का अनुमान सहज ही होता है। मंदिर में अखंड ज्योति प्रज्ज्वलित है। नवरात्रों में यहाँ विशाल मेला लगता है। भगवती अपने भक्तों के रोग, शोक, संताप एवं शत्रुओं के नाश करके उन्हें अभीष्ट फल देकर उनके मनोरथ को पूरा करती है।

योगमाया मंदिर, महरौली

योगमाया का मंदिर दिल्ली में कुतुबमीनार से बिल्कुल पास है। यह बहुत ही प्राचीन मंदिर है। कहा जाता है इस

मंदिर का निर्माण महाभारत युद्ध को समाप्ति के पश्चात् पाण्डवों ने श्रीकृष्ण की बहन योगमाया के लिए किया था। तोमर वंश के राजपूतों ने जब दिल्ली को बसाया, तब उन्होंने देवी योगमाया की विधिवत् पूजा-अर्चना शुरू की। बाद में पाण्डव कालीन इस मंदिर को उचित देखभाल नहीं हुई। इस कारण जीर्ण-शीर्ण हो गया था। इस मंदिर का जीर्णोद्धार 1827 में लाला सेठ मल्ल ने करवाया। मंदिर बड़ा विशाल है। पूरब के द्वार से भक्त मंदिर में प्रवेश करते हैं। मंदिर में कोई मूर्ति नहीं है, बल्कि काले पत्थर का एक गोलाकार पिण्ड संगमरमर के एक कुंड में स्थापित किया गया है। पिण्ड को लाल वस्त्र से ढककर रखा जाता है। मंदिर की दीवारों पर सुंदर चित्र बने हैं।

मंदिर में तीन प्रमुख द्वार हैं। दक्षिण द्वारा के सामने दो शेर बने हुए हैं जिसे देवी का वाहन माना जाता है। शेर के पश्चिम की ओर कोने में गणेश जी की मूर्ति और एक छोटी शिला भैरव की है। मंदिर के उत्तरी द्वार के सामने शिवजी का मंदिर है। योगमाया मंदिर को शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। श्रावण शुक्ल की चतुर्दशी को यहाँ भव्य मेला लगता है।

छतरपुर मन्दिर

यह शक्तिपीठ मंदिर दक्षिण दिल्ली के महरौली क्षेत्र के छतरपुर गाँव के पास है। इसलिए आम श्रद्धालु इसे छतरपुर मंदिर भी कहते हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत के बड़े मंदिरों में से एक है। लगभग 70 एकड़ भूखंड पर फैला यह मंदिर आज देश-विदेश के श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र बन चुका है। यहाँ बने सभी भवन विशिष्ट वास्तुशैली का प्रदर्शन करते हैं। इस मंदिर की स्थापना 1970 में संत श्री नागाल बाबा ने की थी। उस समय यह क्षेत्र जंगलों से अटा पड़ा था। अब यह पूरा क्षेत्र तीर्थनगरी का रूप ले चुका है। मंदिर में माँ कात्यायनी, माँ महिषासुरमर्दिनी, राम दरबार, शिव पार्वती, लक्ष्मी जी, गणेश जी, हनुमान जी की बड़ी भव्य मूर्तियाँ लगी हैं। यह देवी का चमत्कार ही है कि स्थानीय लोगों ने दिल खोलकर मंदिर के लिए जमीनें दान दीं और देखते ही देखते यह स्थान मंदिरों की नगरी बन गया है। नवरात्रों में प्रतिदिन यहाँ लाखों भक्त आते हैं। संत नागपाल बाबा 70 के दशक में जब यहाँ आए थे तब यहाँ एक दुर्गा आश्रम था जो अब शक्तिपीठ की एक इकाई है। धीरे-धीरे बाबा के भक्तों की संख्या बढ़ी और बाबा ने शक्तिपीठ की रूपरेखा तैयार की। यही शक्तिपीठ अब दिल्ली का सबसे बड़ा मंदिर है।

बाबा नागपाल मूलतः कर्नाटक के थे। बचपन में ही इनके माता-पिता इस दुनिया से चल बसे। इसके बाद एक अज्ञात महिला उन्हें एक देवी मंदिर में ले गयी। माना जाता है कि वह महिला कोई साधारण महिला नहीं थी। बाबा जी के लिए वह महिला साक्षात् माँ थीं। उन्हीं की प्रेरणा से बाबा कर्नाटक से निकल पड़े और हिमालय के विभिन्न क्षेत्री में वर्षों तक तपस्या की। फिर वे दिल्ली आ गए। बाबा नागपाल की कड़ी मेहनत से खड़ी यह शक्तिपीठ आज केवल धार्मिक केंद्र ही नहीं है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक केन्द्र भी है। बाबा अब इस लोक में नहीं हैं, पर उन्होंने मंदिर के सुचारू संचालन

के लिए एक न्यास का गठन कर दिया था। उस न्यास का नाम है 'श्री आद्याकात्यायनी शक्तिपीठ मंदिर न्यास'। यह न्यास आज शिक्षा, स्वावलम्बन, चिकित्सा जैसे प्रकल्पों का संचालन भी करता है। इन प्रकल्पों से स्थानीय लोगों और अन्य भक्तों को बड़ा लाभ होता है। 'शिवानी विद्या निकेतन', 'श्री संत नागपाल प्रौद्योगिकी शिक्षा संस्थान', 'सिलाई कढ़ाई कताई बुनाई प्रशिक्षण केन्द्र', 'श्री संत नागपाल संस्कृत महाविद्यालय एवं शोध संस्थान', 'संत नागपाल चिकित्सा निदान एवं अनुसंधान केन्द्र' आदि इसके प्रकल्प हैं। ये सारे प्रकल्प नि:शुल्क हैं। न्यास द्वारा संचालित विद्यालय और व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों में बड़ी संख्या में पढ़ते हैं। संस्कृत महाविद्यालय में प्रथमा से शास्त्री तक की पढ़ाई होती है। यह आवासीय महाविद्यालय है और इसका पूरा खर्च न्यास उठाता है। विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई, भोजन, आवास से सारी सुविधाएँ नि:शुल्क उपलब्ध हैं। इस शक्तिपीठ द्वारा कुष्ठ एवं तपेदिक रोगियों की भी मदद की जाती है। बाबा ने पूर्वी दिल्ली के ताहिरपुर में रहने वाले 100 कुष्ठ परिवारों को गोद लिया था। उनके लिए घर बनवाया, उन्हें दवाइयाँ उपलब्ध करवाई, उनके बच्चों के लिए विद्यालय बनवाए आदि। यह शक्तिपीठ आज आध्यात्मिक, शैक्षणिक और सामाजिक कार्यों के द्वारा भक्तों और जन सामान्य को आलोकित कर रही है।

गुफा मंदिर, प्रीत विहार

पूर्वी दिल्ली के प्रीत विहार क्षेत्र में स्थित इस मंदिर की अनेक विशेषताएँ हैं। यहाँ 140 फीट लम्बी एक गुफा है। इसलिए यह गुफा मंदिर के नाम से विख्यात है। गुफा के अंदर माँ चिंतपूर्णी, माता कत्यायनी, संतोषी माँ, लक्ष्मी जी, ज्वाला जी की मूर्तियाँ स्थापित है। गुफा में गंगा जल की एक धारा बहती रहती है। यह जल धारा गुफा के ऊपर स्थापित शिवजी की मूर्ति की जटाओं से निकलती है। मंदिर परिसर की भव्यता 108 फीट नर्मदेश्वर शिवलिंग और 50 हजार किलो के द्वादश ज्योतिलिंग से भी बढ़ती है। यह ज्योतिलिंग 15 फीट ऊँचा है। ❐

सार्थक संदेश

कैथल की उपायुक्त डॉक्टर प्रियंका सोनी ने एक बुजुर्ग को एक दिन के लिए अपनी कुर्सी पर बैठाकर सार्थक संदेश दिया है। विश्व बुजुर्ग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में वह बुजुर्ग उन्हें मिल गए और बोले, कोई हमारी सुनवाई नहीं करता। इस पर उपायुक्त ने कहा कि आज आप ही सबकी सुनवाई करेंगे। प्रियंका सोनी का यह सद्व्यवहार सराहनीय है। यदि प्रियंका सोनी की तरह सभी अधिकारी संवेदनशील हो जाएं तो इस तरह के दिवस मनाने की हमें आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। यह आवश्यक नहीं कि सभी अधिकारी उन्हें अपनी कुर्सी पर ही बैठा दें, लेकिन उनका सम्मान करें। उनकी समस्याओं को सुनें। उन पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करें। कैथल की उपायुक्त की यह बात महत्वपूर्ण है कि एक दिन सभी को इसी अवस्था में आना है। इसलिए सभी अधिकारियों को भी उपायुक्त की ही तरह सोचना चाहिए। और अधिकारियों को ही क्यों? समाज के हर व्यक्ति को ऐसा ही सोचना चाहिए। बुजुर्ग हमारी धरोहर हैं। वे क्रोध में भी जो कहते हैं, वह हमारे लिए आशीर्वाद होता है। ❐

पिछले महीने हिन्दी दिवस मनाया गया है। इस आलेख में पढ़ें कि हिन्दी भारतीयों से क्या अपेक्षा रखती है।

मैं हिन्दी हूँ

■ डॉ. मृदुला पांडे

आप मुझे 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष याद करते हैं, शुभकामनाएँ देते हैं और फिर भूल जाते हैं। 14 सितंबर इसलिए याद रखते हैं, क्योंकि यह दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है और 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है। 1949 में 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत हुई थी, ताकि मेरा प्रचार-प्रसार किया जा सके। हमारे देश की संविधान सभा ने हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर, 1949 में दिया और अपनी अधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया।

मेरा प्रश्न है आपसे कि हिन्दी भाषा को विभिन्न भाषाओं, विशेषकर अंग्रेजी के सामने इतना कम क्यों समझते है? मैं तो आपकी मातृभाषा हूँ, 14 सितंबर को तो महान उत्सव के रूप में मनाएं और पूरे वर्ष मुझे याद रखें, लेकिन मुझे बहुत दुःख होता है जब आप मेरा प्रयोग करने में कतराते हैं। अंग्रेजी और अन्य भाषाओं को बहुत महत्व देते हैं ।

मैं हिन्दी हमारे देश की संस्कृति, परंपरा और सभ्यता सभी को बखूबी प्रस्तुत करने में सक्षम हूँ, तभी तो विश्व के कोने-कोने में विद्यार्थी मुझे जानने, समझने और बोलने के प्रयास में जुटे हैं।

मैं राष्ट्र भाषा हूँ और विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा हूँ। लगभग 500 से 600 मिलियन लोग बातचीत के लिए मुझे अपनाते हैं, पर आप भारतीय मुझे अपनाने में इतना संकोच क्यों करते हैं? आज कई विदेशी छात्र हमारे देश में हिन्दी सीखने आ रहे हैं। मैं अपने देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब हूँ, तभी तो हिन्दी सम्मेलन 1975 में नागपुर और फिर उसके पश्चात् विश्व के अन्य देशों में आयोजित किए गए। 14 सितंबर, 1949 को गांधी जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन में मुझे राष्ट्रभाषा बनाने को कहा था। तत्पश्चात् संविधान सभा ने एक मत होकर यह निर्णय लिया और फिर मैं भारत की राजभाषा बन गई। मुझे देवनागरी लिपि में भारत की कार्यकारी और राजभाषा का दर्जा अधिकारिक रूप में प्राप्त हो गया। यह दर्जा भारतीय संविधान की धारा 343 (1) के तहत मिला है।

मेरा इतिहास नया नहीं, बल्कि 1,000 वर्ष पुराना है। हिन्दुस्तानियों की पहचान हूँ तो आप मुझे क्यों भूल जाते हो? केवल और केवल 14 सितंबर को मुझे बहुत सम्मान देते हो । हिन्दी दिवस समारोह, सेमिनार व गोष्ठियों का आयोजन करते हो, हिन्दी गीत, तुलसीदास, मुंशी प्रेमचंद, हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखित रचनाएँ पढ़ते और सुनते हो। जिस किसी ने मेरे क्षेत्र में कुछ अच्छा काम किया हो उसे पुरस्कार देते हो, राजभाषा गौरव पुरस्कार देकर सम्मानित कर देते हो। पर केवल 14 सितंबर को ही हिन्दी भाषा को इतना महत्व क्यों देते हो? मुझे ऐसा लगता है कि अंग्रेजी बोलने वाली आबादी को आप समझदार, सभ्य व बड़ा व्यक्ति मानते हो जो अंग्रेजी में बात करता है या साक्षात्कार करता है उसे ही अधिक वरीयता प्रदान करते हो। ऐसा पक्षपात देखकर मुझे आघात पहुँचता है।

जब मैं 14 सितंबर के दिन कश्मीर से कन्याकुमारी तक एकजुट होकर देशभक्ति की भावना प्रदर्शित करने में समझ हूँ तो मुझे प्रत्येक दिन याद रखो, प्रयास करो कि मेरे सहारे से अपनी संस्कृति की जड़ों को पकड़े रखो, मेरे महत्व को समझो, मुझे पहचानो और जानो।

किसी भी ऊँचाई तक पहुँच जाओ, कुछ भी काम करो, कहीं भी काम करो पर मेरे साथ जुड़े रहो। मेरा आप सभी भारतीयों से निवेदन है कि एकजुट होकर जो सम्मान आपने मुझे मातृभाषा का दर्जा देकर दिया है उसे राष्ट्रभक्त बनकर पूरा करो। मैं आपका गौरव हूँ। मुझे सम्मानपूर्वक ग्रहण करो और हमेशा मेरे साथ रहो।

जय भारत, जय हिन्द, जय हिन्दी। ❐

क्या है आरोग्य

■ इन्दिरा राय

पलंग पर लेटी दादी दर्द से कराह रही थीं। बीच-बीच में राम नाम ले रही थीं। करवट बदलने में उन्हें बहुत कष्ट हो रहा था। तब मेरा नाम पुकारा और कहने लगीं, जरा पानी तो लाना। मैं झट से पानी ले आई तब कहने लगीं, ''बेटा पहला सुख निरोगी काया है।'' मैं कुछ समझी नहीं और अपने खेल में लग गई। दादी यह बात बार-बार कहतीं, पर हमें कुछ समझ नहीं आता था। अब समझ आने लगा है उनकी बात बिल्कुल सच्ची थी कल भी आज भी और आने वाले कल में भी। कोरोना महामारी के भय से पूरा विश्व भयाग्रस्त और सशंकित है। क्या इस बीमारी का कोई इलाज है? किन्तु अभी तक वैज्ञानिक इसके लिए कोई दवा नहीं खोज पाए हैं। इसका एक मात्र इलाज स्वयं हमारे शरीर में ही ईश्वर ने वो सारी शक्तियाँ हमारे शरीर को प्रदान की हैं, जिसको हम 'रोग प्रतिरोधक क्षमता' अथवा 'इम्युनिटी' कहते हैं।

इम्युनिटी क्या है, यह जान लेना जरूरी है। जब हमारे शरीर पर बाहरी रोगाणुओं का हमला होता है तब शरीर के अन्दर उपस्थित जीवाणु उसका मुकाबला करते हैं। इस प्रक्रिया में यदि हमारे शरीर के जीवाणु बाहरी हमला करने वाले रोगाणु को मार डालते हैं। ऐसी स्थिति में रोग नहीं होता, परन्तु जब बाहरी हमला करने वाले रोगाणु हमारे शरीर के अन्दर के जीवाणुओं को मार डालते हैं तब हम रोगग्रसित हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यदि हमारी रोग प्रतिरोध क क्षमता अच्छी है तो हम पर कोई रोग हमला नहीं कर पाएगा, हम स्वस्थ और निरोगी रहेंगे।

कुछ लोग सुबह उठकर चाय पीते हैं तब कोई कार्य करते हैं, कुछ लोग बिना सिगरेट पीये शौच नहीं जा पाते। इसके स्थान पर सुबह उठकर तीन या चार गिलास बासी पानी पीना चाहिए। शुद्ध सात्विक आहार का सेवन करना चाहिए। सुबह की ताजी हवा में सैर या व्यायाम करना, नियमित रूप से प्राणायाम का अभ्यास करना, ऐसी ही छोटी-2 बातों पर अमल कर हम आरोग्य पा सकते हैं।

शरीर की इस अद्‌भुत क्षमता को हमारे पूर्वजों ने पहचाना और इसका भरपूर उपयोग किया शरीर को 100 वर्ष से भी अधिक समय तक स्वस्थ रखा। परन्तु आज आधुनिक जीवन शैली के चलते हमने उनकी शिक्षाओं को नकार दिया है जिसके कारण अनेक प्रकार के रोगों से आज मनुष्य ग्रसित है। ऋषि मुनि कंदराओं में रह कर कंद-मूल फल खाकर भी पूर्ण स्वस्थ रहते थे। आज हम अनेक प्रकार के फल मेवा, अनाज इत्यादि खाकर भी पूर्ण स्वस्थ क्यों नहीं हैं, यह विचारणीय प्रश्न है।

समय के साथ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने हमारे समाज में ऐसी मान्यता पैदा कर दी कि हमारी पुरानी चिकित्सा प्रणाली ठीक नहीं है। इसमें रोगी को रोगमुक्त होने में बहुत अधिक समय लगता है। अधिकांशतः लोग एलोपैथी पर ही विश्वास करने लगे अतः एलोपैथी का ही प्रचार-प्रसार अधिक होने लगा। हमारा देसी उपचार, जो सदियों से हमारे पूर्वजों ने अपनाया था, उससे विमुख हो गए। शरीर को पूर्ण स्वस्थ और निरोग रखने के लिए हमें हमारी प्राचीन तथा आधुनिक सभी प्रणालियों में संतुलन बना कर उपयोग करना होगा।

हमारे चारों वेदों में आयुर्वेद भी एक वेद है। इसमें आयु या यो कहें कि स्वास्थ्य से सम्बन्ध रखने वाली बातें लिखी हुई हैं। प्रकृति में पाए जाने वाले पेड़, पौधों, वनस्पतियों से कैसे हम अपने शरीर को पुष्ट, बलवान और निरोग रखें। क्या आपने किसी पशु, पक्षी, जानवर को डॉक्टर के पास जाते देखा है? वे प्रकृति में मौजूद विभिन्न प्रकार की औषधियों पौधों को खाकर अपना

उपचार कर लेते हैं।

आयुर्वेद के उपयोग से शरीर को कैसे स्वस्थ, निरोग तथा बलवान रखें, ये सारी विधियाँ इस प्रणाली में वर्णित हैं। कौन से रोग के लिए कौन सी औषधि कब कितनी मात्रा में कैसे उपयोग में लाई जाए, ये सारी बातें विस्तार से बताई गई हैं।

शरीर मात्र एक भौतिक इकाई नहीं है। इससे मन भी जुड़ा हुआ है। जब हमारा शरीर किसी रोग से ग्रसित होता है तो उसका प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। और जब मन में किसी प्रकार चिन्ता, कुंठा, क्रोध की भावनाएँ उठती हैं, तो उसका प्रभाव तन पर पड़ता है और विभिन्न प्रकार के शारीरिक व मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं। मानसिक रोगों की श्रृंखला भी बहुत लम्बी है। हमारे समाज में मानसिक रोगों को अनदेखी की जाती है।

स्वस्थ्य, निरोग या आरोग्य रहने के लिए तन और मन दोनों पर ध्यान देना होगा, दोनों को संतुलित बनाए रखना होगा। स्वस्थ तन के लिए संतुलित भोजन, आयु के अनुसार उचित व्यायाम तथा पर्याप्त विश्राम आवश्यक है। प्राणायाम से मन पर नियंत्रण होता है। हमारी सांसें मन से जुड़ी हुई हैं। मन में साकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं। सकारात्मक विचारों का तन और मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है, व्यक्ति प्रसन्न रहता है। किसी भी प्रकार का विकार शरीर में न पैदा हो इसके लिए सतत प्रयास आवश्यक है। हमारे देश में ऋतुओं का परिवर्तन होता रहता है। इसका प्रभाव हमारे खान-पान और रहन-सहन पर भी पड़ता है। अतः ऋतु अनुसार अपनी दिनचर्या, भोजन, व्यायाम, वस्त्रों पर भी ध्यान देना आवश्यक है। आज कोरोना काल में जब इस महामारी की कोई औषधि नहीं है हमारी प्राचीन प्रणाली का उपयोग इसकी रोकथाम में किया जा रहा है। हमारे धार्मिक कर्म जैसे हवन, इसमें उपयोग होने वाली औषधि वस्तुएँ अग्नि में जल कर सूक्ष्म रूप धारण कर वातावरण में घुल-मिल जाती हैं। यह वायु सभी के लिए लाभदायक होती है।

आरोग्य क्या है? इसका संधि विच्छेद करते हैं आ+रोग्य ⇁ रोग से रहित, बिना किसी रोग या विकृति के जिसमें किसी प्रकार का शारीरिक या मानसिक रोग न हो, ऐसी स्थिति आरोग्य कहलाएगी। आरोग्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करने होंगे। अपनी दिनचर्या में उचित सुधार करने होंगे। जैसे कुछ लोग सुबह उठकर चाय पीते हैं तब कोई कार्य करते हैं , कुछ लोग बिना सिगरेट पीये शौच नहीं जा पाते। इसके स्थान पर सुबह उठकर तीन या चार गिलास बासी पानी पीना चाहिए। शुद्ध सात्विक आहार का सेवन करना चाहिए। सुबह की ताजी हवा में सैर या व्यायाम करना, नियमित रूप से प्राणायाम का अभ्यास करना, ऐसी ही छोटी-2 बातों पर अमल कर हम आरोग्य पा सकते हैं। अपने अन्य साथियों को भी इस रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। ❐

श्रद्धांजलि

गुरदीन जी नहीं रहे

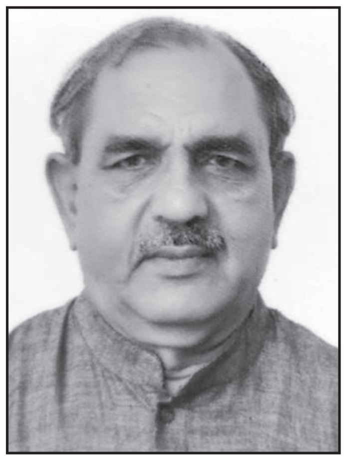

दिल्ली में संघ विचार परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री गुरदीन प्रसाद रुस्तगी का निधन 13 सितंबर को हो गया। उनकी किडनी में पथरी थी। उनका इलाज भी हुआ, लेकिन प्रभु की इच्छा के सामने किसी की नहीं चली। गुरदीन जी का जन्म 7 जून, 1935 को हरियाणा के वोहरा कलां गाँव में हुआ था। 1955 में वे दिल्ली के कृष्णानगर में रहने वाली अपनी बहन के पास पढ़ने के लिए आए और यहीं के होकर रह गए। पढ़ाई पूरी करने के बाद दिल्ली जल बोर्ड में नौकरी की, साथ ही वे संघ के स्वयंसेवक बने। संघ में उन्होंने अनेक दायित्वों का निर्वहन किया। इन दिनों वे विश्व हिंदू परिषद, दिल्ली के संगठन मंत्री थे। उन्हें सेवा भारती की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि। ❐

100 हाथों से कमाएं, 1000 हाथों से दान दें

■ लाजपतराय सभरवाल

यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा था, ''लोक में श्रेष्ठ धर्म क्या है?'' इसके उत्तर में युधिष्ठिर ने कहा था, ''समाज और संसार में दया ही श्रेष्ठ धर्म है।'' अगर अपने से दीन-हीन, असहाय, अभावग्रस्त, आश्रित, वृद्ध, विकलांग, जरूरतमंद व्यक्ति पर दया दिखाते हुए उसकी सेवा और सहायता न की जाए, तो समाज भला कैसे उन्नति करेगा? सच तो यह है कि सेवा ही असल में मानव जीवन का सौंदर्य और श्रृंगार है। सेवा न केवल मानव जीवन की शोभा है, अपितु यह भगवान की सच्ची पूजा भी है। भूखे को भोजन देना, प्यासे को पानी पिलाना, विद्यारहितों को विद्या देना ही सच्ची मानवता है।

आत्म-संतोष की प्राप्ति

दूसरों की सेवा से हमें पुण्य मिलता है, यह सही है, पर इससे तो हमें भी संतोष और असीम शांति प्राप्त होती है। परोपकार एक ऐसी भावना है, जिससे दूसरों का तो भला होता है, खुद को भी आत्म-संतोष मिलता है। मानव प्रकृति भी यही है कि जब वह इस प्रकार की किसी उचित व उत्तम दिशा में आगे बढ़ता है और इससे उसे जो उपलब्धि प्राप्त होती है, उससे उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। 100 हाथों से कमाएं, 1,000 हाथों से दान दें। अथर्ववेद में कहा गया है, 'शतहस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर।' अर्थात् हे मानव, तू सैकड़ों हाथों से कमा और हजारों हाथों से दान कर। प्रकृति भी मनुष्य को कदम-कदम पर परोपकार की यही शिक्षा देती है। हमें प्रसन्न रखने और सुख देने के लिए फलों से लदे पेड़ अपनी समृद्धि लुटा देते हैं। पेड़-पौधे, जीव-जंतु उत्पन्न होते हैं, बढ़ते हैं और मानव का जितना भी उपकार कर सकते हैं, करते हैं तथा बाद में प्रकृति में लीन हो जाते हैं। उनके ऐसे व्यवहार से ऐसा लगता है कि इनका अस्तित्व ही दूसरों के लिए सुख-साधन जुटाने के लिए हुआ हो। सूर्य धूप का अपना कोष लुटा देता है और बदले में कुछ नहीं मांगता। चंद्रमा अपनी शीतल चांदनी से रात्रि को सुशोभित करता है। शांति की ओस टपकाता है और वह भी बिना कुछ मांगे व बिना किसी भेदभाव के। प्रकृति बिना किसी अपेक्षा के अपने कार्य में लगी है और इससे संसार-चक्र चल रहा है।

दया है धर्म, परपीड़ा है पाप

दूसरों के साथ दयालुता का दृष्टिकोण अपनाने से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। इसी तरह अगर किसी को अकारण दुख दिया जाता है और उसे पीड़ा पहुंचाई जाती है, तो इसके समान कोई पाप नहीं है। ऋषि-मुनियों ने बार-बार कहा है कि धरती पर जन्म लेना उसी का सार्थक है, जो प्रकृति की भांति दूसरों की भलाई करने में प्रसन्नता का अनुभव करे। एक श्रेष्ठ मानव के लिए सिर्फ परोपकार करना ही काफी नहीं है, बल्कि इसके साथ-साथ देश और समाज की भलाई करना भी उसका धर्म है। बेशक, आज के युग में भी कुछ ऐसे लोग हैं, जो अपने सुखों को छोड़कर दूसरों की भलाई करने में और दूसरों का जीवन बचाने में अपना जीवन होम कर रहे हैं, पर साथ ही, कुछ ऐसे अभागे इंसान भी हैं, जिन्हें आतंक और अशांति फैलाने में आनंद की अनुभूति होती है। ऐसे लोग मानव होते हुए भी क्या कुछ खो रहे हैं, इसका उन्हें अहसास नहीं है।

सबका हित, अपना हित

गीता (12.4) में लिखा है, 'जो सब प्राणियों का हित करने में लगे हैं, वे मुझे ही प्राप्त करते हैं।' विद्वान लोग विद्या देकर, वैद्य और डॉक्टर रोगियों की चिकित्सा करके, धनी व्यक्ति निर्धनों की सहायता करके तथा शेष लोग अपने प्रत्येक कार्य से सभी का हित करें, तो धरती पर मौजूदा सभी प्राणियों का भला हो सकता है। यही सच्ची भक्ति है। 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय'- इस भाव को अपनाकर ही देश और समाज का भला हो सकता है। चाणक्य ने कहा था, ''परोपकार ही जीवन है। जिस शरीर से धर्म नहीं हुआ, यज्ञ न हुआ और परोपकार न हो सका, उस शरीर का क्या लाभ?'' सेवा या परोपकार की भावना चाहे देश के प्रति हो या किसी व्यक्ति के प्रति, वह मानवता है। इसलिए हर व्यक्ति को यह समझना होगा कि परोपकार से ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। ❐

सीता जी को आश्रय देने वाले संत

■ **आचार्य मायाराम पतंग**

महर्षि वाल्मीकि आदि कवि कहे जाते हैं। एक लोक कथा के अनुसार पहले इनका नाम रत्नाकर था। महर्षि नारद की कृपा से वे राम भजन में लग गए। उनके शरीर पर धूल मिट्टी जम गई। मिट्टी में दीमक ने अपने बिल बना लिए। मिट्टी के ऐसे घर को ही वल्मीक कहा जाता है। इसीलिए सिद्धि प्राप्त करने पर उन्हें वाल्मीकि कहा जाने लगा।

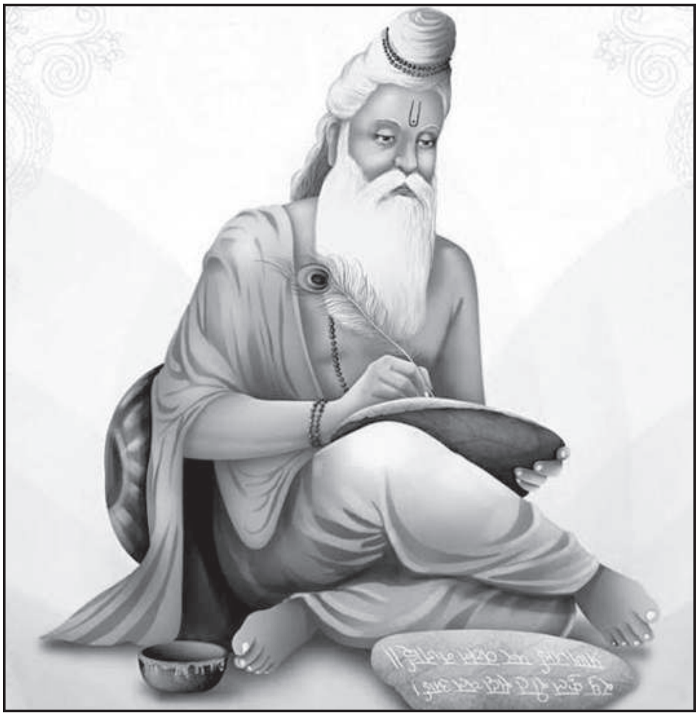

आइए अब इनके महान कृतित्व की चर्चा कर लेते हैं। वाल्मीकि भगवत भक्त बन गए थे। भावुक स्वभाव से कवि बन गए थे। किसी का कष्ट देखकर दुखी हो जाते थे। एक दिन तमसा नदी में स्नान कर रहे थे। तभी उन्होंने देखा सारस का एक जोड़ा नदी में अठखेलियाँ कर रहा है। उन्हें अच्छा लगा। तभी किसी वधिक ने बाण चलाकर जोड़े में से एक हंस (पति) को मार दिया। अब दूसरी सारस (पत्नी) दुखी होकर विलाप करती हुई उसका चक्कर काटने लगी। यह देखकर वाल्मीकि महाराज को अपार कष्ट हुआ। उन्होंने उस वधिक को शाप दे दिया-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समा।
यत्क्रौंच मिथुनाद् एकम् अवधीः काम मोहितम्।।

अर्थात् हे शिकारी! तुझे जीवन में कभी शांति और प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि तूने हँसते-खेलते जोड़े में से एक को मार दिया है। मादा को जीवन भर रोने को विवश कर दिया है।

इसके पश्चात् ब्रह्मा की स्तुति की। शांति के साधन स्वरूप ब्रह्मा ने राम कथा काव्य रचना को कहा। वाल्मीकि जी ने अपने तप से प्राप्त ज्ञान से राम के जीवन को जाना और रामायण की रचना की। इसे आदि काव्य माना जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी की रामचरितमानस या अन्य कवियों की रामकथाएँ सबका स्रोत आदि कवि वाल्मीकि जी की रामायण ही है, क्योंकि वाल्मीकि स्वयं उसी युग में उपस्थित थे। उनके द्वारा लिखी कथा प्रमाणिक तो है ही, उनके जीवन के सभी पक्षों को उजागर करके भगवान राम के मर्यादा पुरुषोत्तम रूप को भी प्रमाणित करने वाली है।

परित्यक्ता सीता को जब लक्ष्मण जी गंगा तट पर छोड़ कर लौटे तो सीता जी कुछ कदम चलकर मूर्छित हो गईं। आश्रम के बाहर खेल रहे बालकों ने दौड़कर महर्षि को सूचना दी। महर्षि वाल्मीकि ने किसी को आदेश नहीं दिया, स्वयं दौड़ते हुए आए और पानी के छींटे दिए। जल पिलाया और अपने साथ आश्रम में ले गए।

महर्षि वाल्मीकि के महान गुण देखिए वाल्मीकि जी का आश्रम अयोध्या राज्य की सीमा में ही था। वह

तुरंत राजा को सूचित भी कर सकते थे। वनवास के समय राम, लक्ष्मण, सीता ने आश्रम में उनके दर्शन भी किए थे। उन्हें आदेश भी दे सकते थे कि सीता को परित्याग करना उनके प्रति अन्याय है, उन्हें सादर वापस ले जाओ। उन्होंने ऐसा नहीं किया, बल्कि सीता को आश्रम में आश्रय दिया। उनके आश्रम में पहले से ऐसी परित्यक्ता, विधवा तथा निराश्रित महिलाएँ अपने बालकों सहित रह रही थीं। उन्हीं के साथ सीता जी को भी रख लिया।

लव-कुश जुड़वा भाई थे। कुश कुछ मिनट बड़े और लव छोटे। महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में जहाँ यज्ञादि, धर्म-कर्म के प्रशिक्षण की व्यवस्था थी, वहीं शस्त्र विद्या की भी प्रशिक्षण व्यवस्था थी। धनुर्विद्या में उन्हें इतना प्रवीण कर दिया कि वे राम की सेना का सफलतापूर्वक सामना कर पाए।

लक्ष्मण, शत्रुघ्न को रणभूमि में मूर्छित कर दिया। यहाँ तक कि हनुमान जी को भी बांध लिया। स्वयं राम जी को युद्ध के लिए आना पड़ा।

दूसरी ओर लव-कुश को संगीत की ऐसी विलक्षण शिक्षा दी कि उनका स्वर सुनते ही प्राणीमात्र भी आकर्षित हो जाए। भगवान राम की संपूर्ण कथा उन्हें स्मरण करवा दी परंतु यह प्रकट नहीं होने दिया कि श्रीराम ही उनके पिता हैं। अश्वमेध यज्ञ में उनकी मोहक वाणी में राम कहानी सुनकर सबको विश्वास हो गया कि यह सीता के पुत्र हैं। प्रभु श्रीराम के बुलावे पर महर्षि वाल्मीकि सीता जी को साथ लेकर गए। वहाँ सीता से पहले स्वयं महर्षि वाल्मीकि जी ने राजा और प्रजा के समक्ष अपने तप की शपथ लेकर भगवती सीता की पवित्रता का विश्वास दिलाया। फिर सीता जी ने अपनी पवित्रता, पतिव्रत की शपथ के साथ ही माँ धरती से अपनी गोद में स्थान देने की प्रार्थना की। क्षण भर में धरती फटी, सिंहासन निकला और सीता धरती माँ की गोद में समा गई।

प्रयाग से आगे सीतामढ़ी नाम से एक पवित्र स्थान है जिसकी खोज मात्र 30 वर्ष पूर्व एक संन्यासी ने की है। वहाँ मंदिर बनाया गया है। इस मंदिर के उद्घाटन के अवसर पर श्री राजनाथ सिंह (तब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे) पधारे थे। श्रीमती हेमा मालिनी (अभिनेत्री) ने मंच पर माँ दुर्गा के रूप में नृत्य प्रस्तुत किया था। सौभाग्य से मैं (लेखक) वहाँ उपस्थित था।

महर्षि वाल्मीकि के महान गुणों के कारण हिंदू धर्म के अनुयायी उनके प्रति अपार श्रद्धा रखते हैं। देश में जातिवाद का प्रभाव इतनी भयानक स्थिति तक जा पहुँचा है कि महर्षि वाल्मीकि की जयंती आज केवल एक वर्ग के लोग मनाते हैं जो यह मानते हैं कि महर्षि वाल्मीकि उनकी जाति में हुए थे। इसी प्रकार भक्त रविदास जी को उनकी जाति का समाज मान्यता देता है। उनके मंदिर बनाता है तथा जन्मोत्सव मनाता है।

महात्मा कबीर को उनकी जाति का समुदाय पूजता है। हिंदू समाज को इन सभी महापुरुषों, कवियों, संतों को पूरा सम्मान देना चाहिए। सभी के उत्सव सारे समाज को मिलजुल कर मनाने चाहिए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आनुषांगिक संगठन सेवा भारती ने इस दिशा में कदम उठाए हैं। सेवा भारती के कार्यकर्ता इन महान संतों की जयंती के साथ सारे समाज को मिलाने के लिए सेतु बनकर कार्य कर रहे हैं। इस वाल्मीकि जयंती पर भी सेवा भारती इस दिशा में प्रयास कर रही है। आइए हम मन से इस सत्य को स्वीकार करें कि सारा हिंदू समाज संगठित होगा तभी समाज जीवित रहेगा। यह पहल नेताओं को भी करनी चाहिए। ❐

चाहे महर्षि वाल्मीकि हों या संत रविदास, ये भारतीय संस्कृति के पोषक और प्रचारक हैं। ये सनातन विचार के वाहक हैं। इसलिए इन महापुरुषों की जयंतियां केवल कुछ लोग ही न मनाएं, बल्कि पूरा सनातन समाज मनाए। यही भारत के हित में है। इन महापुरुषों को जो लोग जाति के दृष्टिकोण से देखते हैं, उन्हें भारतीय संस्कृति की जानकारी नहीं है।

पाप की गठरी

एक बार की बात है कि किसी राजा ने यह फैसला लिया कि वह प्रतिदिन 100 अंधे लोगों को खीर खिलाया करेगा। एक दिन खीर वाले दूध में सांप ने मुंह डाला और दूध में विष डाल दिया। जहरीली खीर को खाकर 100 के 100 अंधे व्यक्ति मर गए। राजा बहुत परेशान हुआ कि मुझे 100 आदमियों की हत्या का पाप लगेगा। राजा परेशानी की हालत में अपने राज्य को छोड़कर जंगलों में भक्ति करने के लिए चल पड़ा, ताकि इस पाप की माफी मिल सके। रास्ते में एक गाँव आया। राजा ने चौपाल में बैठे लोगों से पूछा कि क्या इस गाँव में कोई भक्ति भाव वाला परिवार है, ताकि उसके घर रात काटी जा सके?

कथासार-निंदा करना कितना घाटे का सौदा है। निंदक हमेशा दूसरों के पाप अपने सर पर ढोता रहता है और दूसरों द्वारा किए गए उन पाप-कर्मों के फल को भी भोगता है। अतः हमें सदैव निंदा से बचना चाहिए।

चौपाल में बैठे लोगों ने बताया कि इस गाँव में दो बहन-भाई रहते हैं जो खूब पूजा करते हैं। राजा उनके घर रात में ठहर गया। सुबह जब राजा उठा तो लड़की पूजा पर बैठी हुई थी। इससे पहले लड़की की दिनचर्या थी कि वह दिन निकलने से पहले ही पूजा से उठ जाती थी और नाश्ता तैयार करती थी, लेकिन उस दिन वह लड़की बहुत देर तक पूजा पर बैठी रही। जब लड़की उठी तो उसके भाई ने कहा कि बहन तू इतनी देर से उठी है। अपने घर मुसाफिर आया हुआ है और उसे नाश्ता करके दूर जाना है। लड़की ने जवाब दिया कि भैया ऊपर एक मामला उलझा हुआ था। धर्मराज को किसी उलझन भरी स्थिति पर कोई फैसला लेना था और मैं वह फैसला सुनने के लिए रुक गयी थी। इसलिए देर तक ध्यान करती रही।

तो उसके भाई ने पूछा ऐसी क्या बात थी? तो लड़की ने बताया कि फलां राज्य का राजा अंधे व्यक्तियों को खीर खिलाया करता था, लेकिन सांप के दूध में विष डालने से 100 अंधे व्यक्ति मर गए। अब धर्मराज को समझ नहीं आ रहा कि अंधे व्यक्तियों की मौत का पाप राजा को लगे, सांप को लगे या दूध बिना ढके छोड़ने वाले रसोइया को लगे।

राजा भी सुन रहा था। राजा को अपने से संबंधित बात सुन कर दिलचस्पी हो गई और उसने लड़की से पूछा कि फिर क्या फैसला हुआ? लड़की ने बताया कि अभी तक कोई फैसला नहीं हो पाया था। तो राजा ने पूछा कि क्या मैं आपके घर एक रात के लिए और रुक सकता हूँ? दोनों बहन-भाई ने खुशी से उसको हाँ कर दी।

राजा अगले दिन के लिए रुक गया, लेकिन चौपाल में बैठे लोग दिनभर यही चर्चा करते रहे कि कल जो व्यक्ति हमारे गाँव में एक रात रुकने के लिए आया था और कोई भक्ति भाव वाला घर पूछ रहा था, उसकी भक्ति का नाटक तो सामने आ गया है। रात काटने के बाद वह इसलिए नहीं गया क्योंकि जवान लड़की को देखकर उस व्यक्ति की नियत खोटी हो गई। इसलिए वह उस सुन्दर और जवान लड़की के घर पक्के तौर पर ही ठहरेगा या फिर लड़की को लेकर भागेगा। दिन भर उस चौपाल में उस राजा की निंदा होती रही।

अगली सुबह लड़की फिर ध्यान पर बैठी और दिनचर्या के समय अनुसार उठ गई तो राजा ने पूछा, ''बेटी, अंधे व्यक्तियों की हत्या का पाप किसको लगा?''

तो लड़की ने बताया, ''वह पाप तो हमारे गाँव की चौपाल में बैठने वाले लोग बांट के ले गए।'' ❐

(साभार-कल्याण)

सेवा ही जीवन है इनका

■ विनीता अग्निहोत्री

श्रीमती कमला जी (53 वर्षीय) वर्तमान में जिला मोती नगर (केशव पुरम विभाग) में निरीक्षिका पद का दायित्व संभाल रही हैं। 1987 में जब कमला जी काफी संघर्ष और अभावों का समय व्यतीत कर रही थीं, अपने 1-2 वर्षीय पुत्र के साथ, तब एक नजदीकी रिश्तेदार ने सेवा भारती का परिचय दिया और इन्हें वहाँ सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया। पहले तो इनकी समझ में नहीं आया परन्तु काफी समझाने के बाद ये तैयार हुई और उनके साथ नबी करीम आर्य समाज मन्दिर में चलने वाले केन्द्र, जो अब झण्डेवाला विभाग में है, में गईं। वहाँ एक छोटे से साक्षात्कार के बाद शिक्षिका के पद पर उन्हें नियुक्त किया गया। 21 सितम्बर, 1987 से अपनी सेवा देना आरम्भ कर दिया। शुरू-शुरू में तो अच्छा नहीं लगा। लेकिन 1, 2 माह में ही अपने सहयोगियों और बच्चों का प्यार पाकर बहुत अच्छा लगने लगा। आस-पास रहने वाले परिवार भी बहुत प्रेम और सम्मान देते थे। श्रीमती ज्वाला जी, जो वहाँ की शिक्षिका थीं काफी प्रेरणा देती थीं। उनकी प्रेरणा से ही उन्होंने बारहवीं और स्नातक की परीक्षायें पास कीं ओपन विद्यालय से। उसी केन्द्र में कमला जी ने दूसरे पहर में भी शिक्षा कार्य करना आरंभ कर दिया और बाद में तीसरे पहर में भी। उनके अनुसार काफी मन लगने लगा था परिस्थितियाँ भी सुधरने लगी थीं।

लगभग 4 वर्ष बाद बिरला मंदिर केन्द्र में स्थानान्तरण कर दिया गया। स्थान रिक्त होने के कारण वहाँ भी 4 से 5 वर्ष शिक्षण कार्य किया और काफी अच्छा समय बीता। बहुत कुछ सीखने को मिला फिर घर से दूर होने के कारण अपने घर के समीप चलने वाले केन्द्र अमर पार्क में (जिला मोती नगर) में स्थानान्तरण की मांग की। इनकी मांग को स्वीकार किया गया।

शहीद भगत सिंह शिक्षा केन्द्र, अमर पार्क में लगभग 10 वर्ष शिक्षिका पद का दायित्व निर्वाह किया। 2 पारियों और कभी 2-3 पारियों में भी कक्षाएँ लीं। 2015 में प्रोन्नति हुई और निरीक्षिका पद का दायित्व बड़ी लगन और कुशलता के साथ संभाल रही हैं। कमला जी अन्य कार्यकर्ता और शिक्षिकाओं का भी काफी सहयोग करती हैं।

अपने मधुर व्यवहार, मिलनसार स्वभाव, प्रत्येक कार्य में लगन, भजन कीर्तन में अत्यधिक रुचि, हंसमुख और सहयोग करने के कारण केन्द्रों पर सेवा बस्तियों में सबकी प्रिय हैं। उनका कहना है कि मैं जीवन-पर्यन्त सेवा भारती में अपनी सेवा देती रहूँगी। ❒

सकारात्मकता के बीज बोएं

आशाओं ने ही इंसान के जीवन को बचाया है तो उम्र के किसी भी पड़ाव पर अपने अंदर निराशा के बीज क्यों अंकुरित होने दें? कहते हैं न, आदमी उम्र से बूढ़ा नहीं होता मन से बूढ़ा होता है, ऐसे में उम्र के किसी भी पड़ाव में मन को भी क्यों बुढ़ाने दें। आज को पकड़ लें अपनी मुट्ठी में, कल का क्यों इंतजार करें हम? अपने मन को आप ही प्रकृति के पास ले जाएं। बहते झरने, नदी, समुद्र का संगीत सुनें, सुबह की शीतल हवा का आनंद लें, पेड़ों-पहाड़ों को निहारें, चिड़ियों की चहचहाहट सुनें, किसी पशु को अपने शावक को दुलारता देखें। ❒

सेवा संस्कार समरसता समृद्धि

सेवा भारती, दिल्ली

13, भाई वीर सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001

दूरभाष : 011-23345014/15, ई-मेल : info@sewabhartidelhi.org

वर्ष 2020-2022			
क्र.	दायित्व	नाम/पता	दूरभाष
1	संरक्षक	श्री तरूण गुप्ता जी एल-406, अग्रसेन अपार्टमेंट, आई.पी. एक्सटेंशन, दिल्ली-92	मो. 9212752524 tkrgupta@gmail.com
2	अध्यक्ष	श्री रमेश अग्रवाल जी ए-61 आनन्द निकेतन, नई दिल्ली-110021	9810095949 ramesh.agarwal@ agarwalpackers.com
3	उपाध्यक्ष	श्री संजय गर्ग जी डी-1, मेन रोड, मौजपुर, दिल्ली-110053	मो. 9811391229
4	उपाध्यक्ष	श्री संजय जिंदल जी, (सी.सी.टी.वी.) बी-1/248, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063	9871259000 secom91@gmail.com
5	उपाध्यक्ष	श्री हेमन्त कुमार जी ए-1/26, सैक्टर-8, रोहिणी, दिल्ली-110085	9810065247 Hemant,indu61@gmail.com
6	उपाध्यक्ष	श्री निखिलनंदा जी जे एच एस सेवनगार्ड लेबोरेटरी लिमिटिड बी-1/ई-23, मोहन कोपरेटिव इंडस्ट्रियल एस्टेट मथुरा रोड, बदरपुर, नई दिल्ली-110044	9968686655 Nikhilnanda@yahoo.com
7	संगठनमंत्री	श्री शुकदेव जी 1412-ए, रानीबाग, दिल्ली-34	9312237354/9719043300 Shukdev1965@gmail.coom
8	महामंत्री	डा. रामकुमार जी 67ए, पाकेट-ए, हरीहर अपार्टमेन्ट अशोक विहार-2, दिल्ली-110052	9312936897 dr_kumar_ram_@yahoo.com
9	मंत्री	श्री सुशील गुप्ता जी ई 16 नवीन, शहादरा, दिल्ली-110032	9811967800 sushil@samadhan.co.in

10	मंत्री	श्री शेलेन्द्र विक्रम जी सी-ए94सी, डीडीए फ्लैट, हरी नगर क्लॉक टावर, नई दिल्ली-110064	मो. 9717334419 shailendravikram111@gmail.com
11	मंत्री	श्री निर्भय शंकर जी 113, कृष्ण कुंज एक्सटेंशन, लक्ष्मी नगर, दिल्ली 92	9911145198 cansgupta@gmail.com
12	मंत्री	श्रीमती संगीता त्यागी जी, 26, भडौला गांव, आदर्श नगर, दिल्ली-110033	मो. 9212571100, 9212532100 011-65971100 sangeetatyagidelhi21@gmail.com
13	कार्यालय मंत्री	सुश्री अंजू पाण्डेय जी, हाउस नं. 152/48, स्ट्रीट नं. 6, एस ब्लाक, ब्रह्मपुरी, दिल्ली-110043	मो. 9212868896, 9582060926 anjuranip79@gmail.com
14	कोषाध्यक्ष	श्री विपिन अग्रवाल जी 531, कानूनगो आपटमेंन्ट 71, आईपी एक्सटेंशन, पडपडगंज दिल्ली-110092	मो. 9811066838, 8368315079 vipagrawal2004@gmail.com
15	सम्पर्क प्रमुख	श्रीमती निधि आहुजा जी 3 बी/1, एन ई.ए. गंगा राम हास्पीटल मार्ग ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110060	9811411338 fca.nidhiahuja@gmail.com
16	प्रचार प्रमुख	श्री भूपेन्द्र जी 1/36 पहली मंजिल, ललित पार्क, लक्ष्मी नगर, दिल्ली 92	मो. 9811473028 jaigurudev@email.com
17	सदस्य	श्रीमति मधु गुप्ता जी 421/1, अपर आन्नद पर्वत करोल बाग नई दिल्ली-110005	9313183839, 9810044360 madhug197979@gmail.com
18	सदस्य	डॉ. विशाल चड्डा जी मकान न 404 सी 6 एंड 7, आईआईडी एल कालोनी, नियर सिटी सेंन्टर मार्केट, रामाप्रस्थ कॅलोनी, गाजियाबाद	9818345704, 9868396561 drvishalchadha@gmail.com
19	सदस्य	श्री प्रवीण मित्तल जी डी-4 पुष्पांजली इन्कलेव, परवान रोड, पीतमपुरा, दिल्ली-110092	9810044360 pmittal134@gmail.com

सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती (31 अक्तूबर) पर विशेष

सरदारों के सरदार

■ **अंजनी कुमार**

सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे नेता विरले ही होते हैं। पटेल की दृढ़ इच्छाशक्ति और उनके साहस के कारण ही आज भारत का वर्तमान स्वरूप हम सबके सामने है। पटेल नहीं होते तो शायद आज भारत इतना विशाल और मजबूत नहीं रहता। वे सरदारों के सरदार थे। उन्होंने अपनी दृढ़ता से सरदारों (तत्कालीन राजा और नवाब) को झुकने के लिए विवश कर दिया था। इसलिए उन्हें लौहपुरुष भी कहा जाता है। उल्लेखनीय है कि अंग्रेज जब भारत को स्वतंत्र कर रहे थे, तब उन्होंने यहाँ के राजे-रजवाड़ों को भारत या पाकिस्तान, दोनों में किसी एक को चुनने का अधिकार दे दिया था या फिर कोई रियासत अपने को स्वतंत्र भी रख सकती थी। यानी वह भारत या पाकिस्तान दोनों में से किसी का भी हिस्सा नहीं भी बन सकती थी। दरअसल, अंग्रेज भारत को कमजोर कर देना चाहते थे, इसलिए उन्होंने रियासतों को ऐसी छूट दी थी।

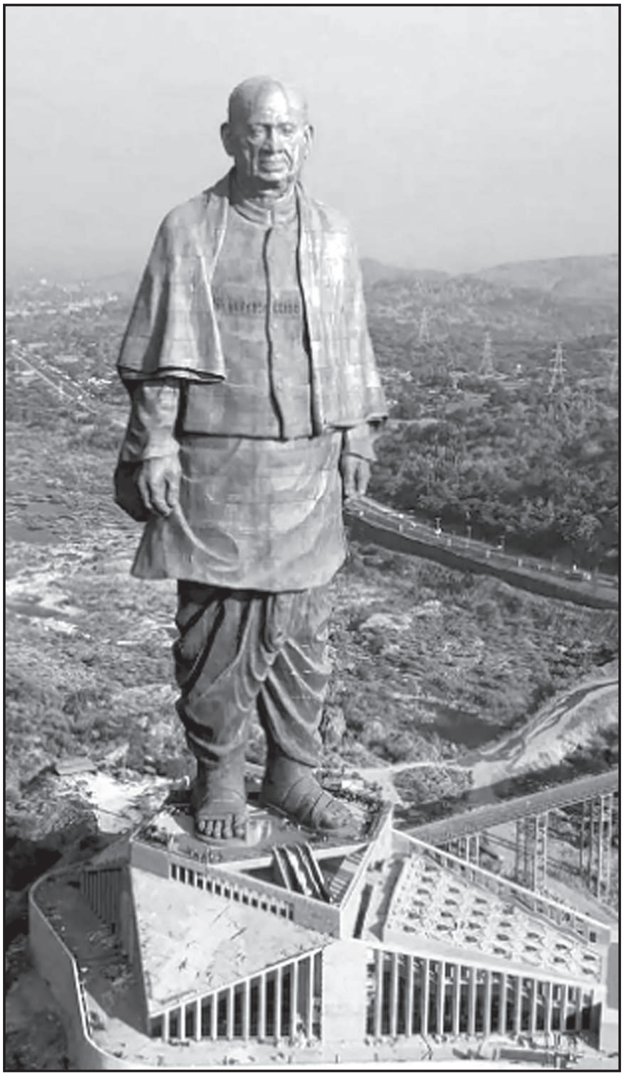

गुजरात में सरदार वल्लभ भाई पटेल की स्थापित विशालकाय मूर्ति। इसे देखने के लिए प्रतिवर्ष 30 लाख से अधिक लोग पहुँचते हैं।

रियासतों को मिली यह छूट ही सशक्त भारत के निर्माण में सबसे बड़ी बाधा थी। सरदार पटेल तब अंतरिम सरकार में उप प्रधानमंत्री के साथ गृहमंत्री भी थे। उन्हीं दिनों मोहम्मद अली जिन्ना इन रियासतों को पाकिस्तान में मिलाने के लिए प्रलोभन दे रहे थे। ऐसी कठिन परिस्थिति में सरदार पटेल ने उस समय के वरिश नौकरशाह वी.पी. मेनन के साथ मिलकर नवाबों और राजाओं से बातचीत शुरू की। सरदार पटेल ने रजवाड़ों के समक्ष 'प्रिवी पर्सेज' के माध्यम से आर्थिक मदद देने का प्रस्ताव रखा। इसका सुखद परिणाम यह हुआ कि स्वतंत्रता मिलने के दिन तक अधिकतर राजे-रजवाड़ों ने भारत में शामिल होने का निर्णय ले लिया। बच गए तो केवल जूनागढ़, हैदराबाद और जम्मू-कश्मीर। जूनागढ़ और हैदराबाद में मुस्लिम नवाब थे और जम्मू-कश्मीर में हिन्दू राजा थे। जूनागढ़ और हैदराबाद के नवाब भारत में मिलने को कतई तैयार नहीं थे। इस स्थिति में

सरदार पटेल अपने असली रूप में आए और उन्होंने इन दोनों रियासतों के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई करने का निर्णय लिया।

जूनागढ़ का नवाब था महावत वान। जूनागढ़ रियासत हिन्दू-बहुल थी। वहाँ की जनता पाकिस्तान के साथ नहीं जाना चाहती थी, इसके बावजूद 14 अगस्त, 1947 को महावत वान ने जूनागढ़ के पाकिस्तान में विलय की घोषणा कर दी। इसके बाद तो सरदार पटेल ने अपना रौद्र रूप दिखाया। उन्होंने जूनागढ़ के लिए सेना भेज दी। जूनागढ़ की जनता ने भी नवाब का साथ नहीं दिया। अपनी हार तय मानते हुए महावत खान कराची (पाकिस्तान) भाग गया। आविरकार नवंबर, 1947 के पहले सप्ताह में जूनागढ़ के दीवान शाहनवाज भुट्टो ने जूनागढ़ के पाकिस्तान में विलय को वारिज कर उसके भारत में विलय की घोषणा कर दी। इस तरह 20 फरवरी, 1948 को जूनागढ़ भारत का अभिन्न अंग बन गया। जूनागढ़ के साथ-साथ सरदार पटेल ने हैदराबाद के विरुद्ध भी कार्रवाई की। उन दिनों हैदराबाद देश की सबसे बड़ी रियासत थी। उसका क्षेत्रफल इंग्लैंड और स्कॉटलैंड के कुल क्षेत्रफल से भी बड़ा था। हैदराबाद के निजाम अली वान आसिफ ने निर्णय लिया कि उनका राज्य न तो पाकिस्तान और न ही भारत में शामिल होगा। हैदराबाद में निजाम और सेना में वरिष्ठ पदों पर मुस्लिम थे, लेकिन वहाँ की लगभग 85 प्रतिशत जनसंख्या हिंदू थी। निजाम ने 15 अगस्त, 1947 को हैदराबाद को एक स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर दिया और पाकिस्तान से हथियार वरीदने की कोशिश करने लगा। तब पटेल ने ऑपरेशन 'पोलो' के तहत सैन्य कार्रवाई का निर्णय लिया। 13 सितंबर, 1948 को भारतीय सेना ने हैदराबाद पर हमला कर दिया। केवल चार दिन बाद ही यानी 17 सितंबर को हैदराबाद की सेना ने समर्पण कर दिया।

जूनागढ़ का नवाब था महावत वान। जूनागढ़ रियासत हिन्दू-बहुल थी। वहाँ की जनता पाकिस्तान के साथ नहीं जाना चाहती थी, इसके बावजूद 14 अगस्त, 1947 को महावत वान ने जूनागढ़ के पाकिस्तान में विलय की घोषणा कर दी। इसके बाद तो सरदार पटेल ने अपना रौद्र रूप दिखाया। उन्होंने जूनागढ़ के लिए सेना भेज दी। जूनागढ़ की जनता ने भी नवाब का साथ नहीं दिया। अपनी हार तय मानते हुए महावत खान कराची (पाकिस्तान) भाग गया।

गृहमंत्री के नाते सरदार पटेल को ही सभी रियासतों को भारत में विलय कराने की जिम्मेदारी दी गई थी, लेकिन एक मात्र रियासत जम्मू-कश्मीर के मामले को नेहरू ने अपने पास रखा। ऐसा माना जाता है कि नेहरू ने जम्मू-कश्मीर को लेकर जैसी नीति अपनाई थी उससे सरदार पटेल असहमत रहते थे।

कश्मीर को लेकर भारत के अंतिम वॉयसराय माउंटबेटन का कहना था कि अब यह विवाद दोनों देशों की आपसी बातचीत से नहीं सुलझने वाला है। इसलिए भारत संयुक्त राष्ट्र पर भरोसा करे। नेहरू इसके लिए तैयार हो गए। वहीं पटेल को इस पर आपत्ति थी लेकिन उनकी नहीं सुनी गई। संघर्षविराम को मान लेने की वजह से जम्मू-कश्मीर का एक बड़ा हिस्सा पाकिस्तान के पास चला गया था और इससे भी पटेल वुश नहीं थे। अगर इस रियासत के विलय का जिम्मा पटेल पर होता तो इसकी ऐसी हालत नहीं होती। अब मोदी सरकार ने अनुच्छेद 370 को हटाकर इस ऐतिहासिक भूल का सुधार कर दिया है।

इस तरह हम सब देखते हैं कि सरदार पटेल ने भारत को एक और मजबूत करने के लिए बहुत ही सूझबूझ से काम लिया था। भारत के प्रति उनके योगदान को देखते हुए ही केंद्र सरकार ने गुजरात के केवडिया में सरदार पटेल की 182 मीटर ऊँची मूर्ति बनवाई है, जिसे देखने के लिए हर दिन हजारों लोग जाते हैं। इसके साथ ही 2014 से उनके जन्मदिन (31 अक्तूबर) को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। जय पटेल!! ❒

बच्चों पर माता-पिता के संस्कारों का प्रभाव

■ होलिका कुमारी

यदि यह कहा जाय कि माता-पिता के आचरणों का बालकों पर जितना प्रभाव पड़ता है; उतना अन्य किसी का नहीं, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। मुख्य बात तो यह है कि अपने बच्चों को सुधारने-बिगाड़ने में जितना हाथ अभिभावकों का रहता है, उतना अन्य किसी का नहीं। माता-पिता के सत्-आचरणों और सद्‌गुणों के प्रभाव से संतान आदर्श गुणवाली बनती है। आरम्भ से ही उनमें जिन संस्कारों की नींव डाली जाएगी, आगे चलकर वे उन्हीं संस्कारों के अनुरूप बनेंगे। बालकगण आरम्भ से ही जैसा आचरण अपने माता-पिता को करते देखते हैं, वैसा ही वे स्वयं भी करने लगते हैं। बालकों का मस्तिष्क और उनकी भावनाएँ बहुत ही कोमल होती हैं। उनकी बुद्धि तो परिपक्व होती नहीं, ज्ञान की परिधि भी बहुत ही सीमित होती है; अत: उनके मस्तिष्क में घरवालों के आचरण का बहुत शीघ्र प्रभाव पड़ जाता है।

यों तो संसार की जितनी भी विभूतियाँ हुई हैं अथवा होती हैं, सब प्राय: अपने ही सिद्धान्तों से महान् होती हैं, फिर भी उनमें प्रेरणा उनकी माता-पिता की दी हुई होती है। बचपन से ही उनके माता-पिता उनमें अच्छे संस्कारों की नींव डालते हैं, उनमें अच्छी भावना की वृद्धि करते हैं, उनके सामने अपना आदर्श उदाहरण रखते हैं, जिससे वे भी वैसे ही चरित्रवान् बनें। उन्हें अपनी संस्कृति तथा आचरण का ऐसा आकर्षक प्रभाव दिखाते हैं कि बालकगण भी उसे अपनाने में अपना गौरव समझते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अपने माता-पिता के आचरणों से प्रभावित और उनसे प्रेरित होकर बालकगण अपने देश, समाज और राष्ट्र का सिर ऊँचा करते हैं। भरत, जिसके नाम पर हमारे देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा, वीरांगना माता शकुन्तला के कारण वीर बन सका। बाद में वही प्रतापी सम्राट् हुआ और भारत के नाम को उज्ज्वल किया। हिंदू-रक्षक वीर शिवाजी को शिवाजी बनाने में उनकी माता जीजाबाई का पूरा-पूरा योगदान था। ध्रुवजी अपनी माता के आचरण और प्रेरणा से ही इतने उच्च को सके। वीर बभ्रुवाहन, अभिमन्यु आदि सभी के जीवन में उनके माता-पिता के आदर्श आचरणों का वह प्रबल प्रभाव पड़ा, जिसने उन्हें भी गौरवान्वित कर देश की विभूतियों में स्थान दिया।

पर बड़े खेद की बात है कि पहले के लोग जितना अपने आचरण का ध्यान रखते थे, उतना आज के लोग

नहीं रखते, इससे संतान भी अवनति के गड्ढे में गिरती जा रही है। जब हम स्वयं चरित्रवान् नहीं हैं तो हमारी संतान क्यों सदाचारिणी होगी? हमें यह स्वप्न में भी नहीं सोचना चाहिये कि हम अपना चरित्र भ्रष्टकर अपनी संतान को सुधार लेंगे। उनमें तो हमारी ही छाप रहेगी; क्योंकि संस्कृत में एक वचन है कि 'आत्मा वै जायते पुत्रः।' अर्थात् पिता ही पुत्ररूप में उत्पन्न होती है। प्राचीन युग में बालकों को आचरण, शिष्टाचार आदि की शिक्षा अपने माता-पिता, गुरुजनों आदि से मिलती थी, जिससे वे आरम्भ से ही चरित्रवान् बनते थे। पहले जहाँ सूर्योदय के पूर्व उठकर लोग तुरंत दैनिक कार्यों से निपटकर पूजा-पाठ, जप-ध्यान, प्रार्थना, देवदर्शन आदि करते थे, प्रातः-सायं गायत्री जपते थे, अन्य धार्मिक कृत्यों का आयोजन करते थे, वहीं अब सूर्योदय के बाद उठते हैं, पूजा-पाठ और देवदर्शन की जगह टी.वी. आदि के कार्यक्रमों का श्रवण होता है। धार्मिक ग्रन्थों के स्थान पर चटपटे और कामक्रीड़ा को प्रोत्साहन देने वाले पत्र और उपन्यासादि पढ़ते हैं तथा अन्य रँगरेलियों में व्यर्थ ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। सायंकाल क्लब, होटल, थियेटर, सिनेमा आदि का आनन्द उठाते हैं। आचरणों को गिराने वाले ये विलासिता के साधन आज के सभ्य और आधुनिक मनुष्य की सोसाइटी के प्रमुख अंग माने जाते हैं। इन आचरणों का हमारी संतानों पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता जा रहा है, यह किसी से छिपा नहीं है। इतना ही नहीं, माता-पिता की बीमारियों के कीटाणु अपने-आप जन्मजात से उनकी संतानों में आकर उनमें भी उसी रोग की उत्पत्ति प्रारम्भ कर देते हैं। वैज्ञानिक खोज ने इस बात को अच्छी तरह सिद्ध कर दिया है। अब वैज्ञानिक खोजों से भी यह सिद्ध हो गया है कि गर्भावस्था में ही अच्छे-बुरे संस्कार हमारी संतानों पर पड़ जाते हैं। हमारे भारतीय शास्त्र इस बात की पुष्टि करते हैं कि शिशु की गर्भावस्था में उनके माता-पिता की जैसी भावना होगी, जैसे विचार होंगे तथा होने वाली संतान के प्रति जैसी भावना होगी या बच्चे की गर्भावस्था तक माता-पिता में जैसे अच्छे-बुरे आचरण से रहेंगे, वे ही सब लक्षण, संस्कार तथा भाव उन नवजात शिशुओं में पाये जायेंगे। महाभारत की कथा को पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने गर्भावस्था में ही अपने पिता द्वारा कही हुई चक्रव्यूह को तोड़ने की सारी कला सीख ली थी।

बालक अपने बचपन में ठीक एक पौधे के समान है, जिसे छोटे रहने पर चाहे जिधर झुका दिया जा सकता है, पर बड़ा होने पर वह किसी तरह नहीं झुकाया जा सकता। यदि माता-पिता की विचारधारा में बच्चे के पिषय में कुछ अन्तर हो तो उसे बच्चे के सामने निपटाना या झगड़ा-लड़ाई करना अच्छा नहीं; अपितु जब बच्चा बाहर हो या वहाँ से दूर हो तो निर्णय कर लेना चाहिये।

अतएव आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि यदि हमें अपनी संतान को आदर्श, सदाचारी और सुसंस्कृत बनाना है तो हम अपना चरित्र इतना दृढ़, खरा और शुद्ध बना लें कि उसका अपने स्वभाव के कारण अनुकरण भी करें तो उससे उनकी कोई हानि न हो। हमें विशेषरूप से सतर्क रहना चाहिये कि हम कोई ऐसा गलत काम तो नहीं कर रहे हैं, जिसका असर बालकों पर भी होगा। इसके अतिरिक्त हमें भूलकर भी बच्चों के सामने-

1. गाली-गलौज नहीं करनी चाहिये; क्योंकि इससे बालक की भी जबान खराब होती है।
2. किसी से अधिक हँसी-मजाक नहीं करना चाहिये और न अश्लील बातें ही करनी चाहिये।
3. किसी को भी व्यर्थ में डाँटना-डपटना अथवा किसी से दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिये।
4. किसी के प्रति अपना क्रोध-प्रदर्शन नहीं करना चाहिये।
5. किसी को मारना-पीटना नहीं चाहिये।
6. नशीली वस्तु आदि का सेवन नहीं करना चाहिये।
7. अपनी स्त्री आदि से किसी ऐसे ढंग से वार्तालाप नहीं करना चाहिये, जिससे उसका असर बालकों पर भी पड़े।

स्पष्ट है कि माता-पिता के आचरण का उनकी संतान पर सबसे गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः शुद्ध आचरण तथा आचार-विचार रखकर तथा उचित संस्कार प्रदान कर हम उन्हें सुसंस्कृत और सदाचारी बना सकते हैं। ❐

महात्मा गाँधी जी की जयंती (2 अक्तूबर) पर विशेष

रामराज्य का आधारसूत्र

■ रिखबचंद जैन

पूरा विश्व संयुक्त राष्ट्र की घोषणा के अनुसार महात्मा गाँधी की जयंती को अहिंसा दिवस के रूप में मनाता है। यह दिन एक शान्ति का शुभ सन्देश मानवता के लिए देता है। करुणा, प्रेम, सर्वधर्म समभाव, विश्व बन्धुत्व हथियारबन्दी, 'वसुधैव कुटम्बकम्, सर्वेभवन्तु सुखिन:' जीयो और जीने दो, लिव एन्ड लैट लिव, प्राणियों में सद्‌भावना हो, विश्व का कल्याण हो आदि शुभ भावनाओं से प्रेरित यह शुभ दिन है। मानव ही नहीं, प्राणी मात्र और वनस्पति जगत के लिए भी मंगलमय भावना लेकर यह अहिंसा दिवस मनाया जाता है। उपरोक्त सभी शुभ संकल्पों का सूत्रपात 'अहिंसा' से ही होता है।

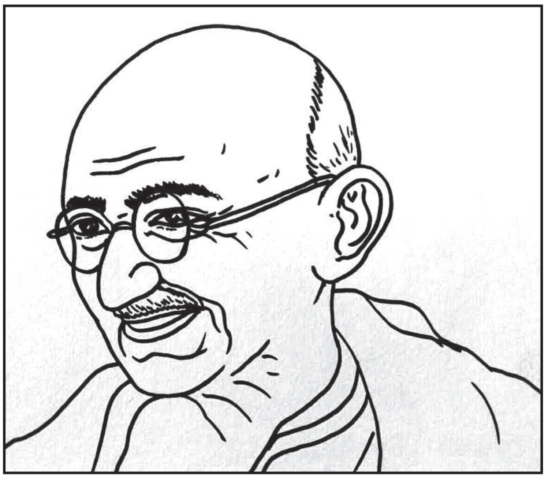

भारतीय धर्म और संस्कृति में अहिंसा ही ज्ञान सम्पदा का आधार है। वेद, पुराण, आदिनाथ रिशभ देव, राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, कबीर, थिरूवलुवर, तुलसीदास जी, वाल्मीकि, नागार्जुन, त्यागराज, नरसी मेहता, मीरा, नानक देव, महर्षि रमण सभी ऋषि-मुनियों ने अहिंसा का ही सन्देश दिया है। कुछ साल पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने जापान के दौरे में कहा, 'भारत के डी.एन.ए. में बस अहिंसा ही रची बसी है।'

भारतीय धर्म और दर्शन ही नहीं, दुनिया का कोई धर्म अहिंसा से असहमत नहीं हो सकता है। क्या कोई धर्म हिंसा करने, मारपीट झगड़ा करने, भेदभाव रखने के लिए कह सकता है?

महात्मा गाँधी ने अहिंसा का सन्देश ही नहीं दिया उसे रचनात्मक तरीके से जी कर दिखाया। रंग भेद, लिंग भेद, असमानता, दासता, पराधीनता सभी मसलों को गाँधी जी ने अहिंसा के माध्यम से हल करके मानवता को अचम्भित कर दिया। दैनिक जीवन को शाकाहार, नशा मुक्ति, सुखी परिवार सम्बन्ध आदि व्यवहारिक तरीकों से अहिंसामय बनाने का रास्ता बताया। प्रेम, भाईचारा, सद्‌भावना का रास्ता दिखाया। गाँधी के वृतान्तों से प्रभावित, विश्व युद्ध से प्रताड़ित विश्व के प्रमुख राष्ट्रों ने राष्ट्र संघ (जो बाद में विस्तारित होकर संयुक्त राष्ट्र बना) की स्थापना अहिंसा, प्रेम, निशस्त्रीकरण के आधार पर की। ब्रिटेन से भारत को आजादी बिना खूनी क्रान्ति के मिली, अहिंसा के प्रयोग से। भारतीय लोकतन्त्र का संविधान भी अहिंसा के आधार पर बना। बीसवीं सदी में पराधीनता से मुक्त अनेकानेक राष्ट्रों ने अहिंसा को अपनाया।

इन सब तथ्यों से स्पष्ट है कि गाँधी जयन्ती 'अहिंसा दिवस' के रूप में आज नहीं तो कुछ एक वर्षो के बाद 'क्रिसमस डे' से भी अधिक जोर-शोर और उल्लास के साथ मनाई जाएगी। दिवाली से भी अधिक जोर से। ईद से भी अधिक खुशी से। अणु, परमाणु बमों से त्रस्त भयभीत मानव को अहिंसा के अलावा शान्ति एवं समृद्धि का कोई और मार्ग है ही नहीं।

भारत में भी इस दिन को और विस्तार से स्कूल कॉलेजों में, जन-जन, घर-घर में सभी के साथ मनाना चाहिए ताकि युवकों और आने वाली पीढ़ीयों को अहिंसा का महत्व विश्वशान्ति और व्यक्ति परिवार में मधुरता के

लिए दिल और दिमाग में स्थापित रहे। भविष्य निर्माण में यह एक बड़ा योगदान रहेगा।

गाँधी जी, महावीर की अहिंसा की सूक्ष्मतम विश्लेषण से सर्वाधिक प्रभावित थे। महावीर ने मन-वचन-कर्म तीनों माध्यम से होने वाली हिंसा न करने को कहा। 'भाव हिंसा भी नहीं।' श्री राम और गीता में गाँधी जी की अटूट आस्था थी। अहिंसा का विवेचन श्रीराम का कोई भिन्न नहीं था। रामराज्य और स्वराज का गाँधी जी उद्घोष ही नहीं, कामना करते रहे। जन-जन में इसकी चाह जगाई। गाँधी जी ने 'हे राम' के पवित्र स्मरण के साथ ही प्राण त्यागे। सन्तों ने कहा है कि रामराज्य का अर्थ है, 'बाघ, हिरण और गाय' एक साथ पानी पी सकें। जैन धर्म में भी अहिंसा का विवेचन बाघ और गाय के एक साथ पानी पीने के दृश्य से चित्रित करते रहे हैं। इसका तात्पर्य यह है कि मत मतान्तर विचारों में विविधता, स्वभाव में टकराव होने पर भी प्रेम और सहअस्तित्व को स्वीकारते हुए जीना। आपस में वैर, विरोध, लड़ाई, हिंसा भाव नहीं रखना। नारद, पुराण, शान्ति पर्व, रामचरितमानस, महाभारत, गोस्वामी जी के आदि सभी ने 'अहिंसा परमोधर्म' का उद्घोष किया।

अतः रामराज्य का तात्पर्य अहिंसा आधारित समानता मूलकः सर्वधर्म समभाव, धर्म सापेक्ष, पंथनिरपेक्ष राज्य व्यवस्था से है। ऐसी रामराज्य स्वराज की व्यवस्था लोकतान्त्रिक तरीके से जनकल्याणकारी ध्येय से होनी चाहिए। 'राम राज्य' शब्द गाँधी जी को सर्वश्रेष्ठ राज्य व्यवस्था को व्याख्यायित करने के लिए अति अनुकूल लगता था। श्रद्धा से इस शब्द (राम राज्य शब्द) को अनपढ़ और अधपढ़ भी श्रद्धा, निष्ठा, सत्यता, सरलता से स्वीकारते, सही व्यवस्था मानते। रामराज्य के सिद्धान्त की खिलाफत कोई धर्म, कोई नीतिशास्त्र नहीं कर सकता है क्योंकि उसमें किसी एक धर्मावलंबी के कल्याण की भावना नहीं है। सर्वहित सर्वजन कल्याण की सर्वे सुखिन भवन्तु की भावना है। ऐसी कल्याणकारी राज्य व्यवस्था मानव ही नहीं प्राणीमात्र और पर्यावरण की भी सुरक्षा सुनिश्चित करती है। सत्य ही धर्म है। सत्यमेव जयते। विवेक से ही सत्यग्राही बन सकते हैं। रामराज्य शब्द सदियों क्या हजारों वर्ष पुराना है, अतः अनभिज्ञ वर्ग को 'पुराना' हो गया लगता है लेकिन सही अर्थ समझने पर आज भी प्रासंगिक है।

राम राज्य ही अहिंसामय होता है। यही गाँधी जी के स्वराज और रामराज्य का सपना था।

सत्य ही धर्म है। सत्यमेव जयते। विवेक से ही सत्यग्राही बन सकते हैं। रामराज्य शब्द सदियों क्या हजारों वर्ष पुराना है, अतः अनभिज्ञ वर्ग को 'पुराना' हो गया लगता है लेकिन सही अर्थ समझने पर आज भी प्रासंगिक है। राम राज्य ही अहिंसामय होता है। यही गाँधी जी के स्वराज और रामराज्य का सपना था।

विश्व को अशांति का खतरा कुछ एक राजनेता, गणनायक, सेनानायक, प्रशासन वर्ग के माइन्ड सेट में अहम, क्रूरता, बदले एवं हिंसक भावना से होता है। ऐसे वर्ग का दिमाग ठंडा, अहम-रहित रखना आवश्यक है। ऐसे लोगों के फितुर से लाखों सैनिक ही नहीं निष्पक्ष निर्दोष नागरिक भी मारे जा सकते हैं। राजा-नेता-सेनापति नहीं हिंसात्मक युद्ध का भार सैनिक एवं जनता को उठाना पड़ता है। ऐसे निर्णयात्मक लोगों के दिल-दिमाग में सदा अहिंसा और क्षमा भाव अवश्य रहना ही परमाणु युग में शान्ति की गारन्टी हो सकती है। आतंकवादी और अतिवादी दोनों ही से मानव को खतरा है। ऐसा खतरा भी प्रेम, करुणा और अहिंसा के संस्कारों से ही दूर हो सकता है। हिंसा से हिंसा कभी भी खत्म नहीं हो सकती है। अहिंसा ही हिंसा को समाप्त करती है।

आइए गाँधी जयन्ती पर बापू के बताए अहिंसा के रास्ते पर चलें। राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, नानकदेव का रास्ता ही गाँधी का रास्ता है। सभी मत-पंथ यही शिक्षा देते हैं। हम सबका अहिंसा और सत्य से ही जीवन मंगलमय हो सकता है। ❒

मणिपुर का महिला बाजार

■ प्रतिनिधि

पूर्वोत्तर भारत का एक प्रमुख राज्य है मणिपुर। मणिपुर राज्य की राजधानी इंफाल है। यहाँ 'एमा कैथेल' नामक एक बाजार है। इस बाजार में जितनी भी दुकानें हैं, उनका संचालन केवल महिलाएँ करती हैं। यह इतना बड़ा है कि इसे एशिया का सबसे बड़ा महिलाओं द्वारा संचालित बाजार कहा जाता है। इस बाजार में कोई भी दुकानदार पुरुष नहीं है। हाँ, खरीददारी करने के लिए कोई भी पुरुष इस बाजार में आ सकता है।

यह बाजार करीब 500 साल पुराना है। यहाँ सैकड़ों दुकानें हैं, जो महिलाओं के द्वारा चलायी जाती हैं। एक अनुमान के अनुसार यहाँ लगभग 4,000 महिलाएँ काम करती हैं।

उल्लेखनीय है कि आज से 500 वर्ष पहले मणिपुर के अधिकतर पुरुष किसी न किसी युद्ध में भाग लेते रहते थे। इस स्थिति में घर चलाने की जिम्मेदारी महिलाओं पर ही रहती थी। इसलिए महिलाओं को घर से बाहर निकलना पड़ा। उन्हीं महिलाओं ने एक स्थान पर कुछ खरीद-बेच शुरू किया। बाद में वह स्थान बाजार में बदलता गया और आज वह बहुत ही बड़ा बाजार बन गया है। आज इस बाजार से मणिपुर की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिल रही है।

बाजार में सूई-धागे से लेकर पूजा की सामग्री, फल, सब्जी, कपड़े, मांस, मछली, दर्जी आदि का काम सब महिलाएँ ही करती हैं।

उस समय जब औपचारिक शिक्षा की कमी थी तो यह बाजार ही महिलाओं के लिए शिक्षा का केंद्र था। राज्य की राजनीति, अर्थनीति से लेकर समसामयिक मुद्दों को लेकर यहाँ बातें होती थीं और सभी महिलाएँ देश में हो रहे क्रिया-कलापों के बारे में ज्ञान प्राप्त करती थीं।

मणिपुरी लोगों में मैतेयी और विष्णुप्रिया ये दो विभाजन हैं। दोनों में बहुत सी बातों में मेल भी हैं और विषमताएँ भी हैं। दोनों ही वुद को असली मणिपुरी कहते हैं। वैर, चाहे कोई भी असली हो पर दोनों मिलकर ही मणिपुरी जाति बनी है। यह बाजार मैतेयी मणिपुरी महिलाओं का है। ❒

सेवा भारती की स्थापना दिवस पर विशेष

■ अंजू पांडेय

अविराम चले थे जिंदगी की दौड़ में, कुछ और-कुछ और करते जाएंगे सेवा के क्षेत्र में कुछ ऐसी ही परिकल्पना के साथ माननीय बालासाहेब देवरस जी से प्रेरणा पाकर माननीय विष्णु जी ने दिल्ली के जहांगीरपुरी की एक सेवा बस्ती से बालवाड़ी केंद्र का प्रारंभ किया। समय बीतता गया लोग जुड़ते गए और कारवां बढ़ता गया। सेवा भारती की विधिवत स्थापना 2 अक्टूबर, 1979 को हुई थी। सेवा भारती एक स्वयंसेवी संस्था है और यह संस्था सेवा के क्षेत्र में कार्य करती है। समाज में जब, जहां, जिसे, जैसी भी आवश्यकता हो, और उसी समाज से जो लोग उस आवश्यकता की पूर्ति कर सकें उन दोनों का आपस में समन्वय करवाना। अर्थात् सेवा भारती एक सेतु या माध्यम बनकर सहायता कार्य करती है। और भविष्य में सहयोग लेने वाला भी सहयोगी बनकर सेवक बने तथा समाज का प्रत्येक वर्ग स्वाभिमान से जीना सीखें, यही सेवा भारती का उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनगिनत स्वयंसेवक कार्यकर्ता दिन-रात स्वेच्छा से कार्य में लगे रहते हैं।

सेवा भारती सबके लिए एक दृष्टि रखते हुए जनकल्याण में पिछले 41 वर्षों से लगी हुई है। वर्षों पूर्व लगाया गया सेवा रूपी एक छोटा सा पौधा आज वटवृक्ष बनकर अनगिनत लोगों को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। सेवा भारती का कार्य सदैव बिना किसी रूकावट के यूं ही चलता रहे। इसी कामना के साथ हम आगे बढ़ते रहें।

सेवा भारती चार आयामों में काम करती है- **शिक्षा, स्वास्थ, स्वावलंबन और सामाजिक।** शिक्षा में बालवाड़ी, बाल/बालिका संस्कार, कोचिंग क्लास, सेवा धाम विद्या मंदिर छात्रावास व स्कूल भी है, जहां पर 13 प्रांतों के 300 बच्चे पढ़ते हैं। इसके अलावा 5 स्कूल और भी चल रहे हैं। स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में चल-अचल व मोबाइल डिस्पेंसरियां चल रही है, इसके अलावा दो डायलिसिस केंद्र, रेडियोलॉजी, पैथ लैब, कुष्ठ आश्रम व अन्य चिकित्सा सेवाएं भी चल रही है। **रहें ना निर्भर, बने आत्मनिर्भर,** ऐसे विजन के साथ सेवा भारती स्वावलंबन के क्षेत्र में कार्य कर रही है, जिसमें सिलाई, मेहंदी, ब्यूटीशियन, कंप्यूटर कोर्स, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रोजेक्ट्स, टाइपिंग, आर्ट एंड क्राफ्ट व फैशन डिजाइनिंग जैसे कोर्स चलाए जा रहे हैं। सामाजिक रूप से कन्या पूजन, मातृछाया, कीर्तन भजन मंडली, सामूहिक कन्या विवाह, महिला गोष्ठी, कथा, हवन तथा समय-समय पर होने वाले उत्सव व त्यौहार, यह सभी कार्य महिला समितियों द्वारा बस्ती की भागीदारी से किया जाता है। **विषम परिस्थितियों में भी अनुकूलता** सेवा भारती नर सेवा, नारायण सेवा के रचनात्मक आंदोलन को आत्मसात करते हुए देश के किसी भी कोने में किसी भी प्रकार की आपदा आए तो सेवा भारती अग्रसर होकर अपनी भूमिका निभाती है और हर संभव प्रयास कर लोगों की सहायता करती है। वर्तमान में चल रहे वैश्विक महामारी में भी सेवा भारती के हजारों कार्यकर्ताओं ने बिना किसी डर के दिन रात काम किया। राशन वितरण, बना हुआ भोजन, चिकित्सा सुविधा, गर्भवती महिलाओं की सेवा, बुजुर्गों की संभाल, रक्तदान शिविर, अन्य प्रांतों से आए बंधुओं की सेवा (जो लॉकडाउन में फंस गए थे) मास्क वितरण, दवाई वितरण, कथा काढ़ा बनाकर जन-जन तक पहुंचाना। इस प्रकार सेवा भारती सबके लिए एक दृष्टि रखते हुए जनकल्याण में पिछले 41 वर्षों से लगी हुई है। वर्षों पूर्व लगाया गया सेवा रूपी एक छोटा सा पौधा आज वटवृक्ष बनकर अनगिनत लोगों को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। सेवा भारती का कार्य सदैव बिना किसी रूकावट के यूं ही चलता रहे। इसी कामना के साथ हम आगे बढ़ते रहें। ❐

लाल बहादुर शास्त्री

■ रचना शास्त्री

लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म भी 2 अक्टूबर, 1904 को मुगलसराय उत्तर प्रदेश में हुआ था। वह एक वर्ष के थे तब उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। अत: उनका पालन–पोषण नाना के द्वारा ही हुआ था। उनके नाना उन्हें 'नन्हे' के नाम से पुकारते थे। कौन जानता था कि यह नन्हा सा बालक बड़ा होकर अपने दृढ़ विश्वास और अद्वितीय साहस से देश की उन्नति में चार चांद लगा देगा।

निर्धन होने पर भी उन्होंने कभी किसी से सहायता की अपेक्षा नहीं की। गरीब होने पर भी शास्त्री जी बहुत स्वाभिमानी थे। उनका विद्यालय गंगा के उस पार था। सामान्यत: वह नाव में बैठकर ही गंगा पार कर विद्यालय जाया करते थे। एक दिन उनके पास नाविक को देने के लिए पैसे नहीं थे। लेकिन उन्होंने अपने किसी सहपाठी से यह बात नहीं की, न ही सहायता मांगी। बल्कि उन्होंने तैरकर गंगा पार की और विद्यालय पहुंचे और ऐसे ही वापिस भी लौटे। स्वतंत्रता संग्राम में बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी तथा बाद में नेहरू जी से भी प्रेरणा लेते रहे, महान् विद्वान एवं स्वतंत्रता सेनानी डॉ. भगवान दास को वे अपना गुरु मानते थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और बाद में काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि प्राप्त की।

27 मई, 1964 को देश के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू की अकस्मात् मृत्यु के पश्चात् जब शास्त्री जी को सर्वसम्मति से देश का प्रधानमंत्री बनाया गया तो उन लोगों को यह विश्वास न होता था कि जवाहर लाल नेहरू जैसे महान् व्यक्ति के बाद लाल बहादुर शास्त्री जैसे छोटे से कद वाला तथा पतला दुबाला आदमी देश को ऐसे समय में संभाल पाएगा जब चारों ओर खतरे के बादल मंडरा रहे थे। किंतु जिस आत्मविश्वास तथा साहस के साथ उन्होंने उस स्थिति को सामना किया और सफलतापूर्वक प्रशासन को चलाया सब लोग चकित रह गये। इतना ही नहीं 1965 में पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खां जैसे अनुभवी जनरल का भी उन्होंने मुंहतोड़ जवाब दिया। अपने सेना अध्यक्षों को उन्होंने आदेश दिया कि आक्रमणकारियों का डटकर मुकाबला करो, ईंट का जवाब पत्थर से दो, इससे भारतीय सेनाओं का मनोबल बढ़ा और उन्होंने पाकिस्तानी आक्रमणकारियों को कोसों पीछे खदेड़ दिया और अंत में कुछ मित्र देशों के अनुरोध पर ताशकंद में सुलहवार्ता हुई। शास्त्री जी क्योंकि मूल रूप से हिन्दू संस्कारों एवं विचारों से प्रभावित थे और भारत की शांति एवं सह अस्तित्व की नीति के परिचालक थे, इसलिए उन्होंने सब विजित क्षेत्र पाकिस्तान को वापस कर उनके साथ पुन: मित्रता स्थापित करना स्वीकार किया। 10 जनवरी, 1966 को उन्होंने मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए और देश के दुर्भाग्य से उसी रात्रि ताशकंद में उनका स्वर्गवास हो गया। उनके शासनकाल में जब अमेरिका ने भारत को गेहूं देना बंद कर दिया और सारा गेहूं समुद्र में डुबो दिया। तब उन्होंने देश पर आयी इस विपत्ति का सामना करने के लिए जनता से सप्ताह में एक बार उपवास करने को कहा और स्वयं भी उसका पालन किया। देशवासियों ने स्वेच्छा से उनका साथ दिया।

वे सच्चे देशभक्त, कुशल प्रशासक एवं निष्ठावान समाज सेवक थे, उनके मन में गरीबों, किसानों व सैनिकों के प्रति अगाध प्रेम था। उनके द्वारा दिया गया 'जय जवान जय किसान' का नारा इसी भावना का द्योतक है। उन्हें मरणोपरांत 'भारत रत्न' की सर्वोच्च उपाधि से सम्मानित किया गया। भारतवासी देश सेवा के लिए सदैव उनके ऋणी रहेंगे तथा उन्हें याद करते रहेंगे।

भारत माता की जय। ❐

हृदय परिवर्तन

■ नन्दिनी रस्तोगी 'नेहा'

निमिषा और विदिशा अच्छी दोस्त थीं। आज ही उनका इण्टर का परिणाम निकला है। विदिशा ने पूरे स्कूल में टॉप किया था और निमिषा दूसरे नम्बर पर आई थी, जिस कारण विदिशा खुशी से पागल हो रही थी। इस खुशी में उसकी सारी सहेलियाँ शामिल थीं। उसे इतना खुश देखकर निमिषा को छः माह पूर्व की वह घटना याद आ गई, जब उसकी मम्मी की अचानक मृत्यु हो गई थी। तब उसका रो-रोकर बुरा हाल था। आँसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। तब निमिषा ने ही उसे समझाया था- देख, होनी को कौन टाल सकता है- अब तुझे ही अंकल और अपने भाई का ख्याल रखना है। विदिशा के एक ही भाई था विशेष, जो कक्षा 9 का छात्र था।

दोनों भाई-बहन का माँ के जाने बाद पढ़ाई से ध्यान हट गया था। विदिशा का घर के कार्यों में और विशेष का सारा दिन खेलने में समय बीतने लगा। इन सबको देखकर उमंग ने दूसरा विवाह करने की सोची। उन्होंने सोचा मुझे तो इस उम्र में बीवी की आवश्यकता नहीं पर बच्चों को तो माँ की आवश्यकता है। वह उन्हें माँ का प्यार दे पायेगी या नहीं यह सोचकर वह चुप रह जाते थे। सौतेली माँ का नाम ही कुछ ऐसा है जो अच्छे-अच्छे को तनाव दे जाता है।

उमंग ने अपने दोस्त राजेश से इस बारे में जिक्र किया तो वह बोला, ''यार! मेरी साली है रोमा। एक वर्ष पहले ही उसके पति का एक्सीडेंट में निधन हो गया था। उसके एक बच्ची है जो शायद 7वीं कक्षा में है। अगर तू कहे तो मैं उससे तेरी बात करूँ। एक बात और मेरी साली बहुत ही सुन्दर है इसलिये उसकी शादी एक सम्पन्न परिवार में हुई थी। उसकी लड़की अपने पिता की सम्पत्ति की अकेली वारिस है।''

राजेश ने बात चलाई। बातों-बातों में बात पक्की हो गई। ससुराल वालों ने रोमा को अपनी बेटी की तरह विदा किया । रोमा अपनी लाडली बिटिया माही को लेकर अपनी नये घर में आ गई।

घर आने पर विदिशा ने और उसके भाई विशेष ने उसे माँ के रूप में स्वीकार नहीं किया। जब पिता कहते-बेटे, माँ नहीं कहते तो मत कहो पर उसका कभी अपमान मत करना । वह तुम सबकी देखभाल करने अपना घर छोड़कर यहाँ आई है। पिता के कहने पर दोनों बच्चों ने उसे मौसी कहना शुरू कर दिया। रोमा ने आते ही घर को बहुत अच्छे से संभाल लिया था। घर का सारा काम वह स्वयं करती और दोपहर को तीनों बच्चों को पढ़ाने बैठ जाती। इस कारण विदिशा को पढ़ाई का पूरा समय मिलने लगा। रोमा एम.ए.बी.एड. थी लेकिन सम्पन्न घर में ब्याही जाने के कारण वह कहीं नौकरी नहीं कर सकी थी। उसने विदिशा की भी पढ़ाई में खूब मदद की जिसके कारण ही उसने अपने कॉलिज में आज टॉप किया था। माही जब प्यार से दीदी व भईया कहती तो उन्हें बहुत अच्छा लगता था। धीरे-धीरे तीनों में सगे भाई बहनों जैसा प्यार हो गया था।

उमंग दिल से माही को अपना नहीं सका था। वह बात-बात पर कहता-रोमा! देखो तुम्हारी लड़की ने यह क्या कर दिया..... देखो वह बाहर खेल रही है उसे अन्दर बुलाओ... आजकल का माहौल कितना खराब है.... क्या तुम नहीं जानती? वह उमंग को प्यार से समझाती, ''अब वह आपकी बेटी है, जैसे मैंने आपके बच्चों को अपनाया है, आपको भी उसे हृदय से अपना मानना होगा। क्या वह आपको पापा नहीं कहती? आज से आप कहेंगे- हमारे बच्चे हमारी माही।''

रोमा ने अपने मृदु व्यवहार से सभी का हृदय परिवर्तन कर दिया था। विदिशा और विशेष को पता भी नहीं चला कि मौसी कब माँ बन गई। उन्होंने मम्मी बोलना कब शुरू किया । कोई उन्हें देखकर यह नहीं कह सकता था रोमा उनकी माँ नहीं है। रोमा के मधुर व्यवहार और अपनेपन ने उमंग को भी बदलने पर मजबूर कर दिया था। ❐

सेतु नाम नया, पर काम नहीं

कार्य

सरकार द्वारा एससी, एसटी और ओबीसी समाज के लिए बनाई गई विभिन्न योजनाओं एवं सेवा बस्तियों में रहने वाले उस समाज के बीच की कड़ी का नाम है सेतु। कुछ भी ऐसा सहयोग, जिसके मात्र एक बार करने से पूरे परिवार के जीवन में स्थाई सकारात्मक परिवर्तन आ सके। जैसे : स्वास्थ्य, शिक्षा, जाति प्रमाणपत्र, कौशल विकास, स्वावलंबन (मुद्रा लोन) आदि।

लक्ष्य

- सेवा बस्ती के द्वारा सेवा बस्ती का विकास। अर्थात् बस्ती में रहने वाले वंचित व उपेक्षित समाज का आत्मसम्मान बनाए रखते हुए, उन्हीं के द्वारा उनका विकास।
- जीवन में स्थाई सकारात्मक परिवर्तन।
- एससी, एसटी और ओबीसी समाज में सेवाभावी नेतृत्व वड़ा करना।
- सरकारी तंत्र व वंचित समाज के बीच विश्वास का वातावरण बनाना।
- समरसता लाना।
- सेवित जन को सेवक बनाना।

कार्य प्रणाली

- नेकी कर कुँए में नहीं डालना।
- विभाग, जिला व बस्ती की टोली, संयोजक व पालक (संघ के कार्यकर्ता)
- सेतु किसी बस्ती को नहीं अपनाएगा, बल्कि सेवा बस्ती सेतु को अपनाएगी।
- सेवा बस्ती, संगठन की योजना से, वहीं के कार्यकर्ताओं के बल पर वड़ी होकर अपना विकास करेगी।

सुझाव

- निर्णय में भूमिका। सेतु का कोई भी काम कब, क्यों, कितना और कैसे करना (करना भी या नहीं करना) इसका निर्णय केवल बस्ती की टोली करेगी।
- उनसे इस बारे में चर्चा कर सुझाव माँगना और फिर अपनी बात रवना।
- हमारी भूमिका अभिभावक के रूप में रहेगी।
- सरकारी योजनाओं की जानकारी देना।
- संगठन की रीति-नीति
- दिशा और दशा
- सामूहिक निर्णय को बल
- बैठक सेवा बस्ती में ही करना व सेवित जनों के घर बस्तीशः साप्ताहिक बैठक व भोजन।

टोली

- विभाग व जिला स्तर पर टोली
- बस्तीशः टोली
- बस्ती पालक (संघ का कार्यकर्ता) व संयोजक (बस्ती से)

- सेवा बस्ती से सेवाभावी लोगों की एक निश्चित टोली।
- टोली में सर्व समाज के लोग।
- टोली में आरडब्ल्यूए, महिलाओं और युवाओं की संख्या।
- निश्चित कार्यकर्ताओं के अलावा राजनीतिक कार्यकर्ताओं/लोगों से बचना।

अभी तक किए गए कुछ प्रयास

- शिक्षा : 125 बच्चों का ईडब्ल्यूएस श्रेणी से निजी विद्यालयों में रजिस्ट्रेशन और दाखिला।
- स्वास्थ्य : लगभग 1500 लोगों की विभिन्न जाँच व इलाज।
- जाति प्रमाणपत्र : लगभग 100 लोगों का रजिस्ट्रेशन।
- कौशल विकास : प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत, पढ़ाई में कमजोर बच्चों के लिए, सेवा बस्ती में जागरूकता अभियान, काउंसलिंग, रजिस्ट्रेशन। महिलाओं को मोबाइल मरम्मत, ब्यूटी आदि का कोर्स कराना।

मुद्रा लोन

- 2018 में 122 लोगों को पचास हजार से कम राशि के लोन पीएनबी के माध्यम से दिए गए।
- सभी की अदायगी नियमित है।
- 2019 में लगभग 400 लोन आवेदन पीएनबी और यूको बैंक से पास हुए या प्रक्रिया में।
- कुछ शर्तों के साथ नाई, सब्जी फल वाले, मीट व्यापारी, रेहड़ी-पटरी वालों को लोन पर विशेष ध्यान।
- कार चालक को टैक्सी मालिक बनाना।
- देश के बड़े मेल ब्यूटी पार्लर से सम्पर्क कर, सेवा बस्ती के कुछ पुरुषों को नाई का निःशुल्क प्रशिक्षण।

उपलब्धि

- अधिकतर विषय प्रमुख : सेवा बस्ती में रहने वाले एससी-एसटी वर्ग के शिक्षित युवा।
- सेवा बस्ती में महिलाओं का सक्रिय होना।
- सामाजिक संघर्ष में कमी।
- लोन पर ब्याज की दर 10 प्रतिशत प्रतिदिन/मासिक से घटकर 9 प्रतिशत वार्षिक हुआ।
- लोन मिलने व उसकी समय पर वापसी के कारण बैंक व सेवा बस्ती में विश्वास का वातावरण बना।

चुनौतियाँ

- उचित कार्यकर्ताओं की कमी।
- सेवा बस्तियों व सरकारी विभागों में एक-दूसरे के प्रति नकारात्मक मानसिकता व अविश्वास का भाव।
- आशा है कि सेतु के माध्यम से एक ऐसा संपन्न और समरस समाज का निर्माण होगा, जो आने वाले समय में भारत और भारतीयता को मजबूत करेगा। ❒

(प्रस्तुति : सेवा भारती)

हे राम!

डॉ. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव'

हे राम! तुम्हारा मधुर नाम
कितना सुंदर कितना ललाम,

यह जीवन खारा सागर है
विषयों की फूटी गागर है
इस जग के भीषण मरुथल में
प्रभु नाम सुधा रस आगर है

देता सबके मन को विराम
हे राम! तुम्हारा मधुर नाम,

कर्मों के जकड़े नागपाश
मैं आकुल हूँ दे दो प्रकाश
अँधियारे में डूबी धरती
इस तम का तुम कर दो विनाश

मणि द्वीप बने पावन सुनाम
स्वीकार करो मेरे प्रणाम,

तुम भोर किरन बनकर आओ
घनश्याम घटा बन छा जाओ
तुम मलय पवन बन लहराओ
प्राणों में आज समा जाओ

गाते-गाते छोड़ूँ नर-तन
पा जाऊँ मैं साकेत धाम,

मैं क्रूर कुटिल कुविचारी हूँ
मैं पापों का गिरि भारी हूँ
कल्याण तुम्हीं कर पाओगे
मैं दीन हीन संसारी हूँ

हे कल्प वृक्ष! हे पुण्यनाम!
ले लो मेरी भी राम-राम। ❒

सेवा, सहानुभूति और उदारता

(ब्रह्मलीन योगिराज श्री देवराहा बाबा जी के अमृत-वचन)

- प्रेम ही सृष्टि है, सबके प्रति प्रेमभाव रखो।
- भूखों को रोटी देने में और दुखियों के आंसू पोछने में जितना पुण्य लाभ होता है, उतना वर्षों के जप-तप से भी नहीं होता।
- परमात्मा से पृथक् कुछ भी नहीं है। यह सर्वव्यापक ईश्वर प्रकृति के कण-कण में व्याप्त है। अतः चराचर को भगवत्स्वरूप मानकर सबकी सेवा करो।
- गीता का सार है, दुखी को सांत्वना तथा कष्ट में सहायता देना एवं उन्हें दुःख-भय से मुक्त करना।
- आत्मचिंतन, दैन्य-भाव और सद्गुरु-सेवा - इन तीनों बातों को कभी मत भूलो।
- प्रतिदिन यथासाध्य कुछ न कुछ दान अवश्य करो, इससे त्याग की प्रवृत्ति जागेगी।
- प्रेम एवं स्नेह से दूसरों की सेवा करना ही सर्वोच्च धर्म है, उससे ऊंचा कुछ नहीं।
- सम्पूर्ण जप और तप दरिद्रनारायण की सेवा और उनके प्रति करुणा के समान है।
- अठारह पुराणों में व्यास देव के दो ही वचन हैं- परोपकार ही पुण्य है और दूसरों को पीड़ा पहुंचाना ही पाप है।
- अतिथि-सत्कार श्रद्धापूर्वक करो; अतिथि का गुरु एवं देवता की तरह सम्मान करो।
- सनातन धर्म के प्रधान अंग गोसेवा, अतिथि सेवा और विष्णु सेवा है।
- गौएं जहां भी रहती हैं, उस स्थान को शास्त्रों ने तीर्थ-सा पवित्र कहा है। वहां प्राणों का त्याग करने से मनुष्य तत्काल मुक्त हो जाता है।
- जिस घर में गरीबों का आदर होता है और न्याय द्वारा अर्जित सम्पत्ति है, वह घर वैकुण्ठ के सदृश है।
- हिन्दुओं की एकमात्र पहचान गोसेवा है।
- जो अपनी मधुरवाणी, सद्विचार, कुशल व्यवहार एवं सदाचार से सभी को प्रसन्न रखता है, उसको भगवान् दूत बनाते हैं।
- जब चलो तो समझो कि मैं भगवान् की परिक्रमा कर रहा हूं, जब पियो तो समझो कि मैं भगवान् का चरणामृत पान कर रहा हूं। भोजन करो तो समझो कि मैं भगवान् का प्रसाद पा रहा हूं, सोने लगो तो समझो कि मैं भगवान् को दण्डवत् कर रहा हूं और उन्हीं की गोद में विश्राम कर रहा हूं। दीनों की सेवा करो तो सोचो कि भगवान् की सेवा कर रहा हूं।
- देख बच्चा! भगवत् साक्षात्कार के वास्ते अन्तःकरण की शुद्धि आवश्यक है, जो लोक कल्याण करते ही सधेगी। शास्त्रमर्यादानुसार जीवन-यापन करते हुए दीन-दुखियों के कष्ट के निवारण का प्रयत्न करो। इसी से कालान्तर में भगवत्साक्षात्कार हो जायेगा।
- मनुष्य तो अपने आप में प्रेम का, दया का, सेवा का और आनन्द का मूर्त रूप होता है।
- प्रत्येक कर्म का ईश्वर की सेवा और परिणाम को भगवत्प्रसाद समझना। सबके प्रति शिष्ट एवं समान भाव रखना, क्रोध-लोभ का परित्याग करना ही प्रभु की सेवा है।
- मानव-जीवन श्रम, सदाचार और सेवा से इतना सुंदर बनाओ कि सारा संसार तुम्हारे जीवन को देखकर प्रसन्न हो। परिवार में जितने भी लोग हों, सभी प्रेम से मिलकर रहना सीखो, फिर देखोगे कि कितना सुख मिलता है।
- गोमाता और संतों का प्राणपण से संरक्षण और सेवा करो।
- सम्पत्ति पाकर भी जिनमें उदारतापूर्वक दान की या सेवा की भावना नहीं आती, वे भाग्यहीन हैं।
- दुखी जनों की सहायता करो। पीड़ा में उन्हें आश्वासन दो। उनके प्रति सदा प्रेम, सेवा, सहानुभूति तथा उदारता का बर्ताव रखोगे तो सम्पूर्ण विश्व आत्मीय बन जायेगा। ❐

जल की कीमत

■ सुनील श्रीवास्तव

तपिश और लू भरी गर्मी में प्यास के मारे कौआ और चिड़िया पानी की तलाशी में एक साथ एक जगह से दूसरी जगह भटक रहे थे। शहर का हर पॉश इलाका छानने के बाद जब उन्हें कहीं पानी नजर नहीं आया तो वे उड़ते-उड़ते घनी आबादी के पुराने जर्जर मकान के आंगन की मुंडेर पर जा पहुँचे। तभी आंगन में झांककर चिड़िया ने देखा कि आंगन में एक महिला नल से पानी भर रही है। चिड़िया ने कहा चलो पानी पीते हैं। कौए ने रोका, अभी नहीं, बाल्टी भरने के बाद जैसे ही यह महिला बाल्टी उठाकर कमरे के भीतर जाएगी, वैसे ही हम लोग नल से गिरते पानी की एक-एक बूँद से अपनी प्यास बुझा लेंगे।

जब बाल्टी में पानी है तो हम लोग पानी की एक-एक बूँद से अपनी प्यास क्यों बुझाएं? बाल्टी से ही पी लेते हैं। अरे नहीं बाल्टी में हम दोनों के मुंह डालते ही यह महिला दौड़कर बाल्टी के पास आएगी और हम पर गुस्सा करते हुए पूरी भरी बाल्टी का पानी यह कहकर नाली में फेंक देगी कि वह पानी अब पीने लायक नहीं रहा। कौए ने चिड़िया को समझाया।

फेंक देती है तो फेंक देने दो, सिर्फ एक बाल्टी पानी ही तो है, अब तक तो हम अपनी प्यास बुझा लें। चिड़िया से रहा नहीं जा रहा था। एक बाल्टी की कीमत भले ही शहर के पढ़े-लिखे, सभ्य समझदार इंसान न जानें, पर हम बेजुबान पशु पक्षी तो पानी की एक-एक बूँद की कीमत समझते हैं। कौआ ने बोला।

कौआ ने नम आँखों से उदास स्वर में आगे बोला, ''दिन-प्रतिदिन धरती का दोहन करके अमृतरूपी इस पानी का लापरवाही से उपयोग करते हुए अगर ये इंसान समय रहते हुए न चेते तो वो दिन दूर नहीं जब ये भी हमारी तरह पानी की एक-एक बूँद के लिए इधर-उधर भटकेंगे।'' ❐

BANSAL INDUSTRIES

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651891-92-93, Fax : +91-11-23651890
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

तीसरी तक पढ़ने वाले हलधर की रचनाओं पर शोध

ये कोसली भाषा के प्रसिद्ध कवि हैं। खास बात यह है कि उन्होंने जो भी कविताएँ और 20 महाकाव्य अभी तक लिखे हैं, वे उन्हें जुबानी याद हैं। अब संभलपुर विश्वविद्यालय में उनके लेन के एक संकलन 'हलधर ग्रन्थावली-2' को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाएगा। सादा लिबास, सफेद धोती, गमछा और बनियान पहने, नाग नंगे पैर ही रहते हैं।

एक समय केवल उन लोगों को पद्म सम्मान (पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री) मिलते थे, जो सत्तारूढ़ नेताओं के चक्कर काटते थे या उनकी चापलूसी करते रहते थे। एक आम आदमी को यह सम्मान तो कभी मिलता ही नहीं था। 2014 के बाद से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उन लोगों को भी सम्मानित करना शुरू किया है, जिन्हें कोई नहीं जानता है, पर उनका काम अद्भुत होता है। ऐसे ही एक सज्जन हैं ओडिशा के श्री हलधर नाग।

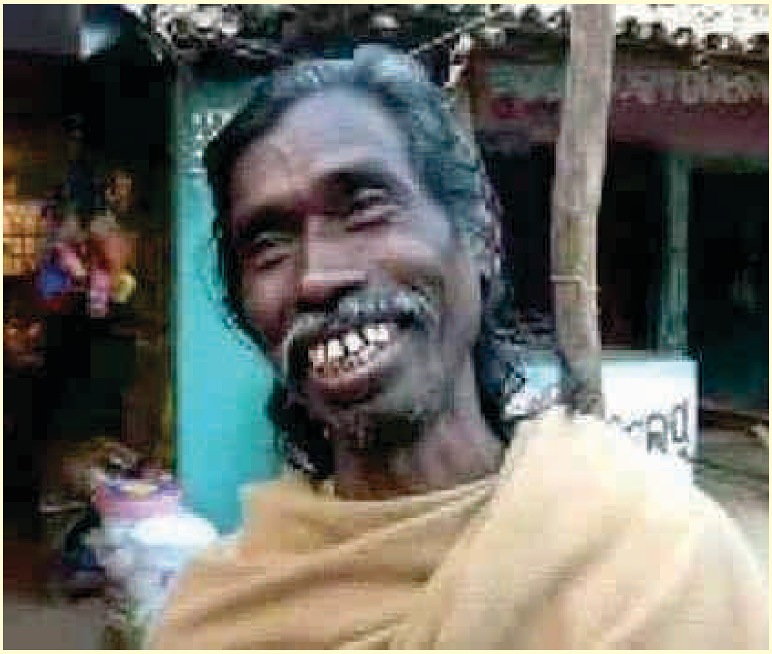

ये कोसली भाषा के प्रसिद्ध कवि हैं। खास बात यह है कि उन्होंने जो भी कविताएँ और 20 महाकाव्य अभी तक लिखे हैं, वे उन्हें जुबानी याद हैं। अब संभलपुर विश्वविद्यालय में उनके लेखन के एक संकलन 'हलधर ग्रन्थावली-2' को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाएगा। सादा लिबास, सफेद धोती, गमछा और बनियान पहने, नाग नंगे पैर ही रहते हैं। ऐसे हीरे को चैनल वालों ने नहीं, मोदी सरकार ने पद्मश्री के लिए खोज के निकाला।

लोक-कवि हलधर नाग के बारे में जब आप जानेंगे तो प्रेरणा से ओतप्रोत हो जाएंगे। हलधर एक गरीब दलित परिवार से आते हैं। 10 साल की आयु में माता-पिता के देहांत के बाद उन्होंने तीसरी कक्षा में ही पढ़ाई छोड़ दी थी। अनाथ की जिंदगी जीते हुए ढाबे में जूठे बर्तन साफ कर कई साल गुजारे। बाद में एक स्कूल में रसोई की देखरेख का काम मिला। कुछ वर्षों बाद बैंक से 1000 रु. कर्ज लेकर पेन-पेंसिल आदि की छोटी-सी दुकान उसी स्कूल के सामने खोल ली जिसमें वे छुट्टी के समय पार्टटाईम बैठ जाते थे। यह तो थी उनकी अर्थव्यवस्था।

अब आते हैं उनकी साहित्यिक विशेषता पर। हलधर ने 1995 के आसपास स्थानीय उडिया भाषा में 'राम-शबरी' जैसे कुछ धार्मिक प्रसंगों पर लिख लिख कर लोगों को सुनाना शुरू किया। भावनाओं से पूर्ण कविताएँ लिख जबरन लोगों के बीच प्रस्तुत करते-करते वे इतने लोकप्रिय हो गए कि 2016 में राष्ट्रपति ने उन्हें साहित्य के लिए पद्मश्री प्रदान किया। इतना ही नहीं, 5 शोधार्थी अब उनके साहित्य पर शोध कर रहे हैं, जबकि स्वयं हलधर तीसरी कक्षा तक पढ़े हैं।

भारत सरकार उन्हें सम्मानित नहीं करती तो आज भी वे गुमनाम रहते। न तो उन पर कोई शोध करता और न ही उनकी रचनाएँ विश्वविद्यालय में पढ़ाई जातीं।

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/83
तिथि 6-7 अक्टूबर, 2020
मुद्रण तिथि-4 अक्टूबर, 2020

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2019-2021
DL(ND)-11/6188/2019-20-21
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

पूर्वी विभाग में सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान

गत 20 सितम्बर को आई पैक्स भवन, इंद्रप्रस्थ विस्तार में आयोजित सम्मान समारोह में कोरोना काल में उल्लेखनीय कार्य करने वाले सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। दिल्ली सरकार में खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के विशेष सचिव श्री मनोज कुमार द्विवेदी और मंडावली थाना के एस.एच.ओ. श्री प्रशान्त कुमार ने कार्यकर्ताओं को प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में पी.पी.टी. के माध्यम से सेवा भारती के कार्यों को बताने का प्रयास किया गया। उसी कार्यक्रम के कुछ चित्र यहाँ प्रस्तुत हैं।

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: इन्दिरा मोहन द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।